قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ اَيُّهَا الْمُرْسَلُوْنَ ﴿31﴾

३१. (हज़रत इब्राहीम ﷺ ने) कहा कि अल्लाह के भेजे हुए (फ़रिश्तो!) तुम्हारा क्या उद्देश्य (मक़सद) है?

قَالُوْٓا اِنَّآ اُرْسِلْنَآ اِلٰى قَوْمٍ مُّجْرِمِيْنَ ﴿32﴾

३२. उन्होंने जवाब दिया कि हम पापी लोगों की तरफ़ भेजे गये हैं।[1]

لِنُرْسِلَ عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِّنْ طِيْنٍ ﴿33﴾

३३. ताकि हम उन पर मिट्टी के कंकरियों की वर्षा करें।

مُّسَوَّمَةً عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُسْرِفِيْنَ ﴿34﴾

३४. जो तेरे रब की तरफ़ से नामांकित (नामज़द) हो चुकी हैं उन सीमा (हद) तोड़ने वालों के लिए।

فَاَخْرَجْنَا مَنْ كَانَ فِيْهَا مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿35﴾

३५. तो जितने ईमान वाले वहाँ थे, हम ने उन्हें निकाल दिया।

فَمَا وَجَدْنَا فِيْهَا غَيْرَ بَيْتٍ مِّنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿36﴾

३६. और हम ने वहाँ मुसलमानों का सिर्फ़ एक ही घर पाया।[2]

وَتَرَكْنَا فِيْهَآ اٰيَةً لِّلَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ﴿37﴾

३७. और वहाँ हम ने उन के लिए जो कष्टदायी अज़ाब का डर रखते हैं, एक पूरी निशानी छोड़ी।

وَفِيْ مُوْسٰٓى اِذْ اَرْسَلْنٰهُ اِلٰى فِرْعَوْنَ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿38﴾

३८. और मूसा की कथा में (भी हमारी तरफ़ से चेतावनी है) जबकि हम ने उसे फ़िरऔन की तरफ़ साफ़ प्रमाण (सुबूत) देकर भेजा।

فَتَوَلّٰى بِرُكْنِهٖ وَقَالَ سٰحِرٌ اَوْ مَجْنُوْنٌ ﴿39﴾

३९. तो उस ने अपने बल बूते पर मुँह मोड़ा[3] और कहने लगा कि यह जादूगर है या दीवाना है।

---

[1] इस से अभिप्राय (मुराद) लूत की क़ौम है, जिस का सब से बड़ा गुनाह लिवातत (समलैंगिक मैथुन) था।

[2] और यह अल्लाह के पैग़म्बर (संदेष्टा) हज़रत लूत ﷺ का घर था, जिस में उनकी दो पुत्रियाँ और कुछ ईमान वाले थे।

[3] मज़बूत पहलू को रुक्न कहते हैं, यहाँ मुराद उसकी अपनी ताक़त और सेना है।

فَاَخَذْنٰهُ وَجُنُوْدَهٗ فَنَبَذْنٰهُمْ فِي الْيَمِّ وَهُوَ مُلِيْمٌ ﴿40﴾

४०. आख़िर हम ने उसे और उसकी सेना को अपनी यातना (अज़ाब) में पकड़ कर समुद्र में डाल दिया, वह था ही निंदनीय (मलामत के लायक़)।

وَفِيْ عَادٍ اِذْ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الرِّيْحَ الْعَقِيْمَ ﴿41﴾

४१. उसी तरह आदियों में भी (हमारी तरफ़ से तंबीह है) जब कि हम ने उन पर बांझ (अशुभ) आंधी भेजी।[1]

مَا تَذَرُ مِنْ شَيْءٍ اَتَتْ عَلَيْهِ اِلَّا جَعَلَتْهُ كَالرَّمِيْمِ ﴿42﴾

४२. वह जिस-जिस चीज़ पर आती थी उसे जीर्ण अस्थियों (बोसीदा हड्डियों) की तरह चूर-चूर कर देती थी।[2]

وَفِيْ ثَمُوْدَ اِذْ قِيْلَ لَهُمْ تَمَتَّعُوْا حَتّٰى حِيْنٍ ﴿43﴾

४३. और समूद (की कथा) में भी (नसीहत है) जब उन से कहा गया कि तुम कुछ दिनों तक फ़ायेदा उठा लो।[3]

فَعَتَوْا عَنْ اَمْرِ رَبِّهِمْ فَاَخَذَتْهُمُ الصّٰعِقَةُ وَهُمْ يَنْظُرُوْنَ ﴿44﴾

४४. लेकिन उन्होंने अपने रब के हुक्म की नाफ़रमानी की, जिस पर उन्हें उन के देखते-देखते (तेज़) कड़क ने बरबाद कर दिया।

فَمَا اسْتَطَاعُوْا مِنْ قِيَامٍ وَّمَا كَانُوْا مُنْتَصِرِيْنَ ﴿45﴾

४५. फिर न तो वह खड़े हो सके और न बदला ले सके।

وَقَوْمَ نُوْحٍ مِّنْ قَبْلُ ۭ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ﴿46﴾

४६. और नूह (ﷺ) की क़ौम का भी इस से पहले (यही हाल हो चुका था) वे भी बड़े अवज्ञाकारी (नाफ़रमान) लोग थे।

---

[1] الرِّيْحَ الْعَقِيْمَ (बांझ हवा) जिस में ख़ैर व बरकत नहीं थी। वह हवा पेड़ों को फलदार करने वाली थी न वर्षा (बारिश) की ख़बर देने वाली, बल्कि केवल तबाही और अज़ाब की हवा थी।

[2] यह उस हवा का असर था जो आद की क़ौम पर प्रकोप (अज़ाब) के रूप में भेजी गई, यह तेज़ हवा सात रातें और आठ दिन लगातार चलती रही। (अल-हाक्क:-७)

[3] यानी जब उन्होंने अपने ही मांग किये चमत्कार (मोजिज़े) से प्रकट ऊंटनी को क़त्ल कर दिया तो उन से कह दिया गया कि अब तीन दिन तुम और दुनिया का मज़ा ले लो। तीन दिन के बाद तुम तबाह कर दिये जाओगे, यह इसी तरफ़ इशारा है। कुछ ने इसे सालेह (ﷺ) की नबूअत के शुरू का वादा माना है, लफ़्ज़ों का यह मायने भी हो सकता है बल्कि पहले वाक्य-क्रम (स्याक़) से यही मायने ज़्यादा ठीक है।

وَالسَّمَآءَ بَنَيْنٰهَا بِاَيْىدٍ وَّاِنَّا لَمُوْسِعُوْنَ (47)

४७. और आकाश को हम ने (अपने) हाथों से बनाया है और बेशक हम विस्तार (कुशादगी) करने वाले हैं।

وَالْاَرْضَ فَرَشْنٰهَا فَنِعْمَ الْمٰهِدُوْنَ (48)

४८. और धरती को हम ने फ़र्श बना दिया है[1] तो हम बहुत अच्छे बिछाने वाले हैं।

وَمِنْ كُلِّ شَيْءٍ خَلَقْنَا زَوْجَيْنِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ (49)

४९. और हर चीज़ को हम ने जोड़ा-जोड़ा पैदा किया है[2] ताकि तुम नसीहत हासिल करो।

فَفِرُّوْٓا اِلَى اللّٰهِ ۭ اِنِّىْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ (50)

५०. तो तुम अल्लाह की तरफ़ दौड़-भाग (यानी ध्यान) करो। बेशक मैं तुम्हें उसकी तरफ़ से साफ़ तौर से आगाह करने वाला हूं।

وَلَا تَجْعَلُوْا مَعَ اللّٰهِ اِلٰـهًا اٰخَرَ ۭ اِنِّىْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ (51)

५१. और अल्लाह के साथ किसी दूसरे को देवता (माबूद) न बनाओ। बेशक मैं तुम्हें उसकी तरफ़ से स्पष्ट (वाज़ेह) रूप से सचेत (आगाह) करने वाला हूं।

كَذٰلِكَ مَآ اَتَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا قَالُوْا سَاحِرٌ اَوْ مَجْنُوْنٌ (52)

५२. इसी तरह जो लोग उन से पहले गुज़रे हैं, उन के पास जो भी रसूल आया उन्होंने कह दिया कि या तो यह जादूगर है या दीवाना है।

اَتَوَاصَوْا بِهٖ ۚ بَلْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُوْنَ (53)

५३. क्या ये इस बात की एक-दूसरे को वसीयत करते गये हैं, नहीं बल्कि ये सभी सरकश हैं।

فَتَوَلَّ عَنْهُمْ فَمَآ اَنْتَ بِمَلُوْمٍ (54)

५४. तो आप उनसे मुंह फेर लें, आप पर कोई मलामत (इल्ज़ाम) नहीं।

وَّذَكِّرْ فَاِنَّ الذِّكْرٰى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِيْنَ (55)

५५. और शिक्षा (नसीहत) देते रहें, बेशक ये शिक्षा ईमानवालों को फ़ायेदा देगी।[3]

---

[1] यानी बिस्तर की तरह उसे बिछा दिया।

[2] यानी हर चीज़ को जोड़ा-जोड़ा नर और मादा या उस के मुक़ाबिल और विलोम (ज़िद) को भी पैदा किया है। जैसे अंधेरा-उजाला, थल-जल, चांद-सूरज, मीठा-कडुवा, रात-दिन, भला-बुरा, जीवन-मृत्यु, ईमान-कुफ़्र, सौभाग्य-दुर्भाग्य, स्वर्ग-नरक, जिन्न-इंसान, आदि (वग़ैरह)। यहां तक कि जानदार के मुक़ाबले में बेजान। इसलिए ज़रूरी है कि दुनिया का भी जोड़ा हो यानी परलोक (आख़िरत), दुनिया के मुक़ाबिले में दूसरी ज़िंदगी।

[3] इसलिए कि नसीहत से फ़ायेदा उन्हीं को पहुंचता है, या मतलब यह है कि आप शिक्षा

५६. मैंने जिन्नात और इंसानों को सिर्फ इसीलिए पैदा किया है कि वे केवल मेरी इबादत करें ।[1]

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ ﴿56﴾

५७. न मैं उन से जीविका (रिज़्क) चाहता हूँ, न मेरी यह इच्छा है कि ये मुझे खिलायें ।

مَا أُرِيدُ مِنْهُمْ مِنْ رِزْقٍ وَمَا أُرِيدُ أَنْ يُطْعِمُونِ ﴿57﴾

५८. यक़ीनन अल्लाह (तआला) तो ख़ुद रोज़ी देने वाला ताक़त वाला और बलवान है ।

إِنَّ اللَّهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِينُ ﴿58﴾

५९. तो जिन लोगों ने ज़ुल्म किया है उन्हें भी उन के साथियों के हिस्से के बराबर हिस्सा मिलेगा, इसलिए वे मुझ से जल्दी न मांगें ।

فَإِنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذَنُوبًا مِثْلَ ذَنُوبِ أَصْحَابِهِمْ فَلَا يَسْتَعْجِلُونِ ﴿59﴾

६०. तो ख़राबी है काफ़िरों को उन के उस दिन की जिसका वह वादा दिये जाते हैं ।

فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ يَوْمِهِمُ الَّذِي يُوعَدُونَ ﴿60﴾

सूरतुत्तूर-५२

سُورَةُ الطُّورِ

सूर: तूर मक्का में नाज़िल हुई और इस में उन्चास आयतें और दो रूकूअ हैं ।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है ।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

१. क़सम है तूर की ।[2]

وَالطُّورِ ﴿1﴾

(नसीहत) देते रहें, इस से वह ज़रूर फ़ायेदा हासिल करेंगे, जिन के बारे में अल्लाह के ज्ञान (इल्म) में है कि वह ईमान लायेंगे ।

[1] इस में अल्लाह के उस इरादे (मशीयत) को ज़ाहिर किया गया जो शरीअत के अनुसार वह बंदों से चाहता है कि सारे इंसान और जिन्न सिर्फ़ एक अल्लाह की इबादत करें और आज्ञापालन (इताअत) भी उसी एक की करें, अगर इसका सम्बन्ध उत्पत्ति (तक्वीन) के इरादे से होता तो सब उसकी इबादत और आज्ञापालन के लिए मजबूर होते और कोई उस से फिरने की क़ुदरत न रखता, यानी इस में इंसानों और जिन्नों को उन के जीवन का मक़सद याद कराया गया है, जिसे अगर उन्होंने भूलाये रखा तो आख़िरत में कड़ी पूछ होगी और वह उस इम्तेहान में नाकाम माने जायेंगे जिस में अल्लाह ने उन्हें इरादे और पसंद की आज़ादी दे रखी है ।

[2] तूर वह पहाड़ है जिस पर मूसा (ﷺ) से अल्लाह ने बात की । उसे तूर सीना भी कहा जाता है, अल्लाह ने उस के इसी महत्व (अहमियत) की वजह से उसकी क़सम ली है ।

وَكِتٰبٍ مَّسْطُوْرٍ ﴿2﴾

२. और लिखी हुई किताब की।

فِيْ رَقٍّ مَّنْشُوْرٍ ﴿3﴾

३. जो झिल्ली के खुले हुए पन्नों में है।

وَّالْبَيْتِ الْمَعْمُوْرِ ﴿4﴾

४. और आबाद घर की।[1]

وَالسَّقْفِ الْمَرْفُوْعِ ﴿5﴾

५. और ऊँची छत की।

وَالْبَحْرِ الْمَسْجُوْرِ ﴿6﴾

६. और भड़काए हुए सागर की।

اِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ لَوَاقِعٌ ﴿7﴾

७. बेशक आप के रब का अज़ाब होकर रहने वाला है।

مَّا لَهٗ مِنْ دَافِعٍ ﴿8﴾

८. उसे कोई रोकने वाला नहीं।

يَّوْمَ تَمُوْرُ السَّمَآءُ مَوْرًا ﴿9﴾

९. जिस दिन आकाश थरथराने लगेगा।[2]

وَّتَسِيْرُ الْجِبَالُ سَيْرًا ﴿10﴾

१०. और पहाड़ चलने-फिरने लगेंगे।

فَوَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿11﴾

११. उस दिन झुठलाने वालों की (पूरी) ख़राबी है।

الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ خَوْضٍ يَّلْعَبُوْنَ ﴿12﴾

१२. जो अपनी बेहूदा बातों में उछल-कूद कर रहे हैं।

---

[1] यह بيت معمور (बैते मअमूर) सातवें आसमान पर वह इबादत घर है, जिस में फ़रिश्ते इबादत करते हैं, यह इबादत घर फ़रिश्तों से इस तरह भरा रहता है कि रोज़ सत्तर हज़ार फ़रिश्ते इबादत के लिए आते हैं, जिनकी फिर क़यामत तक दोबारा बारी नहीं आयेगी, जैसाकि मेराज की हदीसों में बयान किया गया है, कुछ ने बैते मअमूर से ख़ानये काबा मुराद लिया है जो इबादत के लिए आने वाले इंसानों से हर समय भरा रहता है। मअमूर का मतलब है आबाद और भरा हुआ।

[2] مور (मौर) का मतलब है गति और उथल-पुथल, क़यामत के दिन आकाश के प्रबंध (निज़ाम) में जो उथल-पुथल और तारों की टूट-फूट की वजह से जो बिखराव पैदा होगा, उसको इन शब्दों से व्यंजित (ताबीर) किया गया है, और यह उपर बयान किये गये अज़ाब के लिए समय है, यानी यह अज़ाब उस दिन होगा जब आकाश थरथरायेगा और पहाड़ अपनी जगह छोड़कर रूई के गालों की तरह और रेत के कणों (ज़र्रों) की तरह उड़ जायेंगे।

يَوْمَ يُدَعُّونَ إِلَىٰ نَارِ جَهَنَّمَ دَعًّا ⑬

१३. जिस दिन वे धक्के दे-देकर जहन्नम की आग की तरफ़ लाये जायेंगे।

هَٰذِهِ النَّارُ الَّتِي كُنتُم بِهَا تُكَذِّبُونَ ⑭

१४. यही (नरक की) वह आग है जिसे तुम झूठ कहते थे।

أَفَسِحْرٌ هَٰذَا أَمْ أَنتُمْ لَا تُبْصِرُونَ ⑮

१५. (अब बताओ) क्या यह जादू है? या तुम देखते ही नहीं हो।

اصْلَوْهَا فَاصْبِرُوا أَوْ لَا تَصْبِرُوا سَوَاءٌ عَلَيْكُمْ ۖ إِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ⑯

१६. इस में जाओ, (नरक में) अब तुम्हारा धैर्य (सब्र) रखना और न रखना तुम्हारे लिए बराबर है, तुम्हें केवल तुम्हारे कर्मों (अमल) का बदला दिया जायेगा।

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَنَعِيمٍ ⑰

१७. बेशक सदाचारी (परहेज़गार) लोग जन्नत में और सुखों में हैं।

فَاكِهِينَ بِمَا آتَاهُمْ رَبُّهُمْ وَوَقَاهُمْ رَبُّهُمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ⑱

१८. उन्हें जो उन के रब ने दे रखी हैं, उस पर ख़ुश हैं, और उन्हें उनके रब ने नरक के अज़ाब से भी बचा लिया है।

كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ⑲

१९. तुम मज़े से खाते-पीते रहो उन अमलों के बदले जो तुम करते थे।

مُتَّكِئِينَ عَلَىٰ سُرُرٍ مَّصْفُوفَةٍ ۖ وَزَوَّجْنَاهُم بِحُورٍ عِينٍ ⑳

२०. बराबर बिछे हुए ख़ूबसूरत तख़्त पर तकिये लगाये हुए।[1] और हम ने उन की शादी बड़ी-बड़ी आँखों वाली हूरों से कर दिये हैं।

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَاتَّبَعَتْهُمْ ذُرِّيَّتُهُم بِإِيمَانٍ أَلْحَقْنَا بِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَمَا أَلَتْنَاهُم مِّنْ عَمَلِهِم مِّن شَيْءٍ ۚ كُلُّ امْرِئٍ بِمَا كَسَبَ رَهِينٌ ㉑

२१. और जो लोग ईमान लाये और उन की औलाद ने भी ईमान में उन का अनुगमन (पैरवी) किया हम उन की औलाद को उन तक पहुँचा देंगे और उन के कर्मों से हम कुछ कम न करेंगे, हर इंसान अपने-अपने कर्मों (अमल) का गिरवी है।

---

[1] مَصْفُوفَةٍ (मस्फ़ूफ़:) एक-दूसरे से मिले हुए, जैसेकि वह पंक्तिवद्ध (सफ़बस्ता) हैं, या कुछ ने उसका मतलब बयान किया है कि वह आपस में आमने-सामने होंगे, जैसे मैदाने जंग में सेनायें (फ़ौजें) आमने-सामने होती हैं।

وَأَمْدَدْنٰهُم بِفَاكِهَةٍ وَلَحْمٍ مِّمَّا يَشْتَهُونَ ﴿22﴾

२२. और हम उन के लिए मेवे और मज़ेदार (मरग़ूब) गोश्त की रेल-पेल कर देंगे।

يَتَنَازَعُونَ فِيهَا كَأْسًا لَّا لَغْوٌ فِيهَا وَلَا تَأْثِيمٌ ﴿23﴾

२३. (ख़ुशी के साथ) वे एक-दूसरे से (शराब के) प्याले की छीना-झपटी करेंगे, जिस शराब के मज़े में न बेहूदा कलाम निकलेंगे और न पाप होगा।[1]

وَيَطُوفُ عَلَيْهِمْ غِلْمَانٌ لَّهُمْ كَأَنَّهُمْ لُؤْلُؤٌ مَّكْنُونٌ ﴿24﴾

२४. और उन के चारों तरफ़ सेवा के लिए (सेवक) बालक चल-फिर रहे होंगे, जैसेकि वे मोती थे जो छिपाकर रखे थे।

وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ﴿25﴾

२५. और वे आपस में एक-दूसरे की तरफ़ मुंह करके सवाल करेंगे।

قَالُوا إِنَّا كُنَّا قَبْلُ فِي أَهْلِنَا مُشْفِقِينَ ﴿26﴾

२६. कहेंगे कि इस से पहले हम अपने घर वालों में बहुत डरा करते थे।

فَمَنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا وَوَقَانَا عَذَابَ السَّمُومِ ﴿27﴾

२७. तो अल्लाह (तआला) ने हम पर बड़ा उपकार (एहसान) किया, और हमें तेज़ गर्म हवाओं के प्रकोप (अज़ाब) से बचा लिया।[2]

إِنَّا كُنَّا مِن قَبْلُ نَدْعُوهُ ۖ إِنَّهُ هُوَ الْبَرُّ الرَّحِيمُ ﴿28﴾

२८. हम इस के पहले ही उस को पुकारा करते थे[3] बेशक वह बड़ा एहसान करने वाला और बड़ा दयालु (रहम करने वाला) है।

فَذَكِّرْ فَمَا أَنتَ بِنِعْمَتِ رَبِّكَ بِكَاهِنٍ وَلَا مَجْنُونٍ ﴿29﴾

२९. तो आप समझाते रहें, क्योंकि आप अपने रब की नेमत से न तो काहिन (ज्योतिषी) हैं न दीवाना।

أَمْ يَقُولُونَ شَاعِرٌ نَّتَرَبَّصُ بِهِ رَيْبَ الْمَنُونِ ﴿30﴾

३०. क्या (काफ़िर) इस तरह कहते हैं कि यह शायर है, हम उस पर कालचक्र (यानी मौत) का इंतेज़ार कर रहे हैं।

---

[1] उस शराब में दुनियावी शराब का असर नहीं होगा, उसे पीकर न कोई बहकेगा कि अपशब्द कहे, न इतना बेसुध होगा कि गुनाह करे।

[2] سَمُوم (समूम) लू, झुलसाने वाली गर्म हवा को कहते हैं, नरक के नामों में से एक नाम भी है।

[3] यानी केवल उसी एक की वंदना (इबादत) करते थे, उस के साथ किसी को साझी नहीं करते थे, या यह मतलब है कि उसी से जहन्नम के अज़ाब से बचने की दुआ करते थे।

३१. (आप) कह दीजिए कि तुम इंतेजार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इंतेजार करने वालों में हूं।

قُلْ تَرَبَّصُوا فَإِنِّي مَعَكُم مِّنَ الْمُتَرَبِّصِينَ (31)

३२. क्या उनकी बुद्धियाँ (अक़्लें) उन्हें यही सिखाती हैं? या ये लोग ही उद्दण्ड (सरकश) हैं।

أَمْ تَأْمُرُهُمْ أَحْلَامُهُم بِهَٰذَا ۚ أَمْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُونَ (32)

३३. क्या ये कहते हैं कि इस (नबी) ने (क़ुरआन) खुद गढ़ लिया है, हक़ीक़त यह है कि वे ईमान नहीं लाते।

أَمْ يَقُولُونَ تَقَوَّلَهُ ۚ بَل لَّا يُؤْمِنُونَ (33)

३४. अच्छा, अगर यह सच्चे हैं तो भला इस जैसी एक (ही) बात यह (भी) तो ले आयें।[1]

فَلْيَأْتُوا بِحَدِيثٍ مِّثْلِهِ إِن كَانُوا صَادِقِينَ (34)

३५. क्या ये बिना किसी (पैदा करने वाले) के ख़ुद ही पैदा हो गये हैं, या ये ख़ुद पैदा करने वाले हैं?

أَمْ خُلِقُوا مِنْ غَيْرِ شَيْءٍ أَمْ هُمُ الْخَالِقُونَ (35)

३६. क्या उन्होंने ने ही आसमानों और ज़मीन को पैदा किया है? बल्कि ये यक़ीन न करने वाले लोग हैं।

أَمْ خَلَقُوا السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ ۚ بَل لَّا يُوقِنُونَ (36)

३७. या क्या इन के पास तेरे रब के ख़जाने हैं? या (उन ख़जानों के) ये रक्षक (मुहाफ़िज़) हैं।

أَمْ عِندَهُمْ خَزَائِنُ رَبِّكَ أَمْ هُمُ الْمُصَيْطِرُونَ (37)

३८. या क्या इन के पास कोई सीढ़ी है, जिस पर चढ़कर सुनते हैं? (अगर ऐसा है) तो उनका सुनने वाला कोई वाज़ेह सुबूत पेश करे।

أَمْ لَهُمْ سُلَّمٌ يَسْتَمِعُونَ فِيهِ ۖ فَلْيَأْتِ مُسْتَمِعُهُم بِسُلْطَانٍ مُّبِينٍ (38)

३९. क्या अल्लाह की तो सब पुत्रियाँ हैं और तुम्हारे लिए पुत्र हैं?

أَمْ لَهُ الْبَنَاتُ وَلَكُمُ الْبَنُونَ (39)

४०. क्या तू इन से कोई मज़दूरी माँगता है कि ये उसके बोझ से दबे जा रहे हैं?

أَمْ تَسْأَلُهُمْ أَجْرًا فَهُم مِّن مَّغْرَمٍ مُّثْقَلُونَ (40)

४१. क्या इन के पास परोक्ष (ग़ैब) का इल्म है जिसे ये लिख लेते हैं?

أَمْ عِندَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُونَ (41)

[1] यानी अगर यह अपने दावे में सच्चे हैं कि यह क़ुरआन मोहम्मद (ﷺ) ने ख़ुद गढ़ लिया है तो फिर यह भी इस जैसी किताब बनाकर पेश कर दें, जो बलाग़त, मोजिज़े और असर, उसलूब, इज़हारे हक़ीक़त और मसलों (समस्याओं) के हल में इसका मुक़ाबला कर सके।

أَمْ يُرِيدُونَ كَيْدًا ۖ فَالَّذِينَ كَفَرُوا هُمُ الْمَكِيدُونَ (42)

४२. क्या ये लोग कोई छल करना चाहते हैं? तो (यक़ीन कर लें) कि छल करने वाला गुट काफ़िरों का है।

أَمْ لَهُمْ إِلَٰهٌ غَيْرُ اللَّهِ ۚ سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ (43)

४३. क्या अल्लाह के सिवाय उनका कोई दूसरा माबूद है? (कभी नहीं) अल्लाह (तआला) उन के शिर्क से (शुद्ध) और पाक है।

وَإِن يَرَوْا كِسْفًا مِّنَ السَّمَاءِ سَاقِطًا يَقُولُوا سَحَابٌ مَّرْكُومٌ (44)

४४. अगर ये लोग आकाश के किसी टुकड़े को गिरता हुआ देख लें, तब भी कह दें कि यह तह पर तह बादल है।[1]

فَذَرْهُمْ حَتَّىٰ يُلَاقُوا يَوْمَهُمُ الَّذِي فِيهِ يُصْعَقُونَ (45)

४५. तो आप उन्हें छोड़ दें यहाँ तक कि वे अपने उस दिन से मिल जायें जिस में ये बेहोश कर दिये जायेंगे।

يَوْمَ لَا يُغْنِي عَنْهُمْ كَيْدُهُمْ شَيْئًا وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ (46)

४६. जिस दिन उन्हें उनकी चाल कुछ काम न आयेगी और न वे मदद किये जायेंगे।

وَإِنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا عَذَابًا دُونَ ذَٰلِكَ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ (47)

४७. बेशक ज़ालिमों के लिए इस के सिवाय दूसरे अज़ाब भी हैं, लेकिन उन लोगों में से ज़्यादातर लोग अंजान हैं।

وَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ فَإِنَّكَ بِأَعْيُنِنَا ۖ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ حِينَ تَقُومُ (48)

४८. तू अपने रब के हुक्म की इंतेज़ार में सब्र से काम ले, बेशक तू हमारी आँखों के सामने है, और सुबह जब तू उठे[2] अपने रब की पाकी और प्रशंसा (हम्द) का ज़िक्र कर।

وَمِنَ اللَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَإِدْبَارَ النُّجُومِ (49)

४९. और रात को भी उसकी तस्बीह[3] कर, और तारों के डूबते समय भी।

---

[1] मुराद यह है कि अपने कुफ़्र और उदण्डता (सरकशी) से फिर भी नहीं रुकेंगे, बल्कि ढीठाई करते हुए कहेंगे कि यह प्रकोप (अज़ाब) नहीं बल्कि एक पर एक बादल चढ़ा आ रहा है। जैसाकि कुछ मौक़ों पर ऐसा होता है।

[2] इस खड़े होने से कौन-सा खड़ा होना मुराद है ? कुछ कहते हैं कि जब नमाज़ के लिए खड़े हों, जैसाकि नमाज़ के शुरू में «سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ» पढ़ी जाती है। कुछ कहते हैं कि जब जाग कर खड़े हों, उस समय भी अल्लाह की तस्बीह महिमागान और तारीफ़ मस्नून (उचित) है, कुछ कहते हैं कि जब किसी बैठक (सभा) से खड़े हों।

[3] इस से अभिप्राय (मुराद) क़्यामुल्लैल यानी तहज्जुद की नमाज़ है, जो ज़िन्दगी भर नबी ﷺ का नियम रहा।

सूरतुन नज्म-५३

سُورَةُ النَّجْمِ

सूरः नज्म* मक्का में नाज़िल हुई, इसमें बासठ आयतें और तीन रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

وَالنَّجْمِ إِذَا هَوٰى ﴿1﴾

१. क़सम है सितारे की जब वे गिरे।[1]

مَا ضَلَّ صَاحِبُكُمْ وَمَا غَوٰى ﴿2﴾

२. कि तुम्हारे साथी ने न रास्ता खोया है न वह टेढ़े रास्ते पर है।

وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوٰى ﴿3﴾

३. और न वह अपनी मर्ज़ी से कोई बात कहते हैं।

إِنْ هُوَ إِلَّا وَحْيٌ يُّوْحٰى ﴿4﴾

४. वह तो केवल वह्यी (आकाशवाणी) है जो नाज़िल की जाती है।

عَلَّمَهُ شَدِيْدُ الْقُوٰى ﴿5﴾

५. उसे पूरी ताक़त वाले फ़रिश्ते ने सिखाया है।

ذُوْ مِرَّةٍ ط فَاسْتَوٰى ﴿6﴾

६. जो ताक़तवर है[2] फिर वह सीधा खड़ा हो गया।

وَهُوَ بِالْأُفُقِ الْأَعْلٰى ﴿7﴾

७. और वह उच्च आकाश के किनारों (उफ़ुक़) पर था।

ثُمَّ دَنَا فَتَدَلّٰى ﴿8﴾

८. फिर क़रीब हुआ और उतर आया।

---

* यह पहली सूरः है जिस को रसूलुल्लाह ﷺ ने काफ़िरों के जन-समूह (मजमे) में सुनाया। इस के बाद जितने लोग आप के पीछे थे सब ने सज्दा किया सिवाये उमय्या बिन ख़लफ़ के, उस ने अपनी मुट्ठी में मिट्टी ले कर उस पर सज्दा किया, आख़िर में वह कुफ़्र ही की दशा (हालत) में मारा गया। (सहीह बुख़ारी)

[1] कुछ भाष्यकारों (मुफ़स्सिरों) ने तारा से सुरय्या (कृतिका नक्षत्र) मुराद लिया है और कुछ ने ज़ोहरा तारा लिया है, और कुछ ने साधारण (आम) तारा लिया है।

[2] इस से अभिप्राय (मुराद) जिब्रील फ़रिश्ता है जो बलवान और बहुत ज़्यादा ताक़त वाला है। पैग़म्बर पर वह्यी लाने और उसे शिक्षा देने वाला यही फ़रिश्ता है।

९. तो वह दो कमान के बराबर दूरी पर रह गया, बल्कि उस से भी कम ।[1]

فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ أَوْ أَدْنَىٰ ﴿9﴾

१०. तो उस ने अल्लाह के बंदे को संदेश (पैग़ाम) पहुँचाया जो भी पहुँचाया ।

فَأَوْحَىٰ إِلَىٰ عَبْدِهِ مَا أَوْحَىٰ ﴿10﴾

११. दिल ने झूठ नहीं कहा जिसे (रसूल ने) देखा।

مَا كَذَبَ الْفُؤَادُ مَا رَأَىٰ ﴿11﴾

१२. क्या तुम झगड़ा करते हो उस पर जो (पैग़म्बर-संदेष्टा) देखते हैं ।

أَفَتُمَارُونَهُ عَلَىٰ مَا يَرَىٰ ﴿12﴾

१३. उसे तो एक बार और भी देखा था ।

وَلَقَدْ رَآهُ نَزْلَةً أُخْرَىٰ ﴿13﴾

१४. सिदरतुल मुन्तहा के क़रीब ।[2]

عِندَ سِدْرَةِ الْمُنتَهَىٰ ﴿14﴾

१५. उसी के क़रीब जन्नतुल मावा है ।[3]

عِندَهَا جَنَّةُ الْمَأْوَىٰ ﴿15﴾

१६. जबकि सिदरह को छिपाये लेती थी वह चीज जो उस पर छा रही थी ।

إِذْ يَغْشَى السِّدْرَةَ مَا يَغْشَىٰ ﴿16﴾

१७. न तो नज़र बहकी, न सीमा (हद) से बढ़ी ।

مَا زَاغَ الْبَصَرُ وَمَا طَغَىٰ ﴿17﴾

१८. निश्चय (यक़ीनन) उस ने अपने रब की बड़ी-बड़ी निशानियों में से कुछ निशानियाँ देख लीं ।

لَقَدْ رَأَىٰ مِنْ آيَاتِ رَبِّهِ الْكُبْرَىٰ ﴿18﴾

१९. क्या तुम ने लात और उज़्ज़ा को देखा ।

أَفَرَأَيْتُمُ اللَّاتَ وَالْعُزَّىٰ ﴿19﴾

---

[1] कुछ ने अनुवाद (तर्जुमा) किया है, दो हाथों के बराबर, यह नबी ﷺ और जिब्रील عليه السلام की आपस में समीपता (क़ुरबत) का बयान है । अल्लाह तआला और नबी ﷺ के क़रीब होने का बयान नहीं, जैसाकि कुछ लोग यक़ीन दिलाते हैं ।

[2] यह मेराज की रात में जब जिब्रील को असली रूप (शक्ल) में देखा, उसका बयान है । यह सिद्रतुल मुन्तहा एक बैरी का पेड़ है, जो छठें या सातवें आकाश पर है और यह आख़िरी हद है, उस से ऊपर कोई फ़रिश्ता नहीं जा सकता, फ़रिश्ते अल्लाह का हुक्म भी यहीं से हासिल करते हैं ।

[3] इसे "जन्नतुल मावा" इसलिए कहते हैं कि आदम عليه السلام का आवास और निवास यही था, कुछ कहते हैं कि आत्मायें (रूहें) यहीं आकर जमा होती हैं ।

وَمَنٰوةَ الثَّالِثَةَ الْأُخْرٰى ﴿20﴾

२०. और तीसरे आख़िरी मनात को ।[1]

أَلَكُمُ الذَّكَرُ وَلَهُ الْأُنْثٰى ﴿21﴾

२१. क्या तुम्हारे लिए पुत्र और उस (अल्लाह) के लिए पुत्रियाँ हैं?

تِلْكَ إِذًا قِسْمَةٌ ضِيْزٰى ﴿22﴾

२२. यह तो अब बड़ी नाइंसाफ़ी का बटवारा है ।

إِنْ هِيَ إِلَّا أَسْمَاءٌ سَمَّيْتُمُوهَا أَنْتُمْ وَآبَاؤُكُمْ مَا أَنْزَلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ۚ إِنْ يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَمَا تَهْوَى الْأَنْفُسُ ۚ وَلَقَدْ جَاءَهُمْ مِنْ رَبِّهِمُ الْهُدٰى ﴿23﴾

२३. असल में ये केवल नाम हैं जो तुम ने और तुम्हारे बाप-दादा ने उन के रख लिये हैं, अल्लाह ने उनका कोई सुबूत नहीं उतारा । ये लोग तो केवल अटकल और अपनी मनोकांक्षाओं (ख़्वाहिशात) के पीछे पड़े हुए हैं, और बेशक उन के रब की तरफ़ से उनके पास मार्गदर्शन (हिदायत) आ चुका है ।

أَمْ لِلْإِنْسَانِ مَا تَمَنّٰى ﴿24﴾

२४. क्या हर इंसान जो कामना (तमन्ना) करे उसे सुलभ (हासिल) है?

فَلِلّٰهِ الْآخِرَةُ وَالْأُولٰى ﴿25﴾

२५. अल्लाह ही के लिए है यह लोक और वह आख़िरत ।

وَكَمْ مِنْ مَلَكٍ فِي السَّمٰوٰتِ لَا تُغْنِي شَفَاعَتُهُمْ شَيْئًا إِلَّا مِنْ بَعْدِ أَنْ يَأْذَنَ اللّٰهُ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَرْضٰى ﴿26﴾

२६. और बहुत से फ़रिश्ते आकाशों में हैं जिन की सिफ़ारिश कोई लाभ नहीं दे सकती, लेकिन यह दूसरी बात है कि अल्लाह (तआला) अपनी इच्छा से और अपनी ख़ुशी से जिसे चाहे आज्ञा (इजाज़त) दे दे ।[2]

---

[1] यह मुश्रेकीन (बहुदेववादियों) को फटकारने के लिए कहा जा रहा है कि अल्लाह तो वह है जिस ने जिब्रील ﷺ जैसे महान फ़रिश्तों को पैदा किया । मोहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ जैसे उस के संदेशवाहक (रसूल) हैं, जिन्हें उस ने आकाशों पर बुलाकर अपनी बड़ी-बड़ी निशानियों को भी दिखाया और उन पर प्रकाशना (वह्यी) भी उतारता है, क्या तुम जिन पूज्यों (माबूदों) की इबादत करते हो उन में भी यह या इस तरह के गुण (सिफ़त) हैं?

[2] यानी फ़रिश्ते जो अल्लाह की क़रीबी मख़लूक़ (सृष्टि) हैं उनको भी सिफ़ारिश का हक़ केवल उन्हीं लोगों के लिये होगा जिन के लिये अल्लाह पसन्द करेगा । जब यह बात है तो फिर यह पत्थर की मूर्तियाँ कैसे सिफ़ारिश कर सकेंगी जिन से तुम उम्मीद लगाये बैठे हो? फिर अल्लाह मुश्रिकों (मिश्रणवादियों) के लिए किसी को सिफ़ारिश करने का हक़ ही कहाँ देगा जब कि शिर्क उस के यहाँ माफ़ होने वाला नहीं है, जिसे वह कभी माफ़ नहीं करेगा?

إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ لَيُسَمُّونَ الْمَلَائِكَةَ تَسْمِيَةَ الْأُنْثَىٰ (27)

२७. बेशक जो लोग आख़िरत (परलोक) पर ईमान नहीं रखते, वे फ़रिश्तों को देवियों का नाम देते हैं।

وَمَا لَهُمْ بِهِ مِنْ عِلْمٍ ۖ إِنْ يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ ۖ وَإِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِي مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا (28)

२८. अगरचे उन्हें इसका कोई ज्ञान (इल्म) नहीं, वे केवल अपने गुमान के पीछे पड़े हुए हैं, और बेशक वहम (और अनुमान) सच के सामने कुछ काम नहीं देता।

فَأَعْرِضْ عَنْ مَنْ تَوَلَّىٰ عَنْ ذِكْرِنَا وَلَمْ يُرِدْ إِلَّا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا (29)

२९. तो आप उस से मुंह मोड़ लें जो हमारी याद से मुख मोड़े और जिनका उद्देश्य (मक़सद) केवल दुनियावी जीवन के अलावा कुछ न हो।

ذَٰلِكَ مَبْلَغُهُمْ مِنَ الْعِلْمِ ۚ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيلِهِ وَهُوَ أَعْلَمُ بِمَنِ اهْتَدَىٰ (30)

३०. यही उन के ज्ञान (इल्म) की हद है, आप का रब उसे अच्छी तरह जानता है जो उस के रास्ते से भटक गया है, और वही अच्छी तरह जानता है उसे भी जो संमार्ग (हिदायत) प्राप्त है।

وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ لِيَجْزِيَ الَّذِينَ أَسَاءُوا بِمَا عَمِلُوا وَيَجْزِيَ الَّذِينَ أَحْسَنُوا بِالْحُسْنَى (31)

३१. और अल्लाह ही का है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है, ताकि वह (अल्लाह तआला) बुरे काम करने वालों को उन के कर्मों (अमल) का बदला दे और नेक लोगों को अच्छा बदला दे।

الَّذِينَ يَجْتَنِبُونَ كَبَائِرَ الْإِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ إِلَّا اللَّمَمَ ۚ إِنَّ رَبَّكَ وَاسِعُ الْمَغْفِرَةِ ۚ هُوَ أَعْلَمُ بِكُمْ إِذْ أَنْشَأَكُمْ مِنَ الْأَرْضِ وَإِذْ أَنْتُمْ أَجِنَّةٌ فِي بُطُونِ أُمَّهَاتِكُمْ ۖ فَلَا تُزَكُّوا أَنْفُسَكُمْ ۖ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنِ اتَّقَىٰ (32)

३२. उन लोगों को जो बड़े गुनाहों से बचते हैं और बेशर्मी से भी[1] सिवाय किसी छोटे से पाप के, बेशक तेरा रब उदार (कुशादा) माफ़ करने वाला है, वह तुम्हें अच्छी तरह जानता है जबकि उस ने तुम्हें धरती से पैदा किया और जबकि तुम अपनी माताओं के गर्भ में बच्चे थे, तो तुम अपनी पाकी ख़ुद बयान न करो, वही

[1] كَبَائِر (कबायेर) كَبِيرَة (कबीरह) का बहुवचन (जमा) है। महापाप की तारीफ़ में मतभेद (इख़्तिलाफ़) है। ज़्यादातर धर्म ज्ञानियों (आलिमों) के क़रीब हर वह पाप महापाप है जिस पर नरक की चेतावनी है या जिस के करने पर कड़ी निंदा क़ुरआन और हदीस में की गई है, और धर्मज्ञानी यह भी कहते हैं कि छोटे पाप भी बार-बार और हमेशा करने से महापाप बन जाते हैं।

नेक लोगों को अच्छी तरह जानता है।

أَفَرَءَيْتَ الَّذِى تَوَلَّىٰ ﴿33﴾

३३. क्या आप ने उसे देखा जिस ने मुंह मोड़ लिया।

وَأَعْطَىٰ قَلِيلًا وَأَكْدَىٰ ﴿34﴾

३४. और बहुत कम दिया और हाथ रोक लिया।

أَعِندَهُۥ عِلْمُ الْغَيْبِ فَهُوَ يَرَىٰ ﴿35﴾

३५. क्या उसे परोक्ष (ग़ैब) का ज्ञान है कि वह (सब कुछ) देख रहा है?

أَمْ لَمْ يُنَبَّأْ بِمَا فِى صُحُفِ مُوسَىٰ ﴿36﴾

३६. क्या उसे उस बात की ख़बर नहीं दी गयी जो मूसा (ﷺ) के सहीफ़े (ग्रन्थ) में थी।

وَإِبْرَٰهِيمَ الَّذِى وَفَّىٰٓ ﴿37﴾

३७. और वफ़ादार इब्राहीम (ﷺ) के ग्रन्थ में थी?

أَلَّا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ﴿38﴾

३८. कि कोई इंसान किसी दूसरे का बोझ न उठायेगा।

وَأَن لَّيْسَ لِلْإِنسَٰنِ إِلَّا مَا سَعَىٰ ﴿39﴾

३९. और यह कि हर इंसान के लिए केवल वही है जिस की कोशिश ख़ुद उस ने की।[1]

وَأَنَّ سَعْيَهُۥ سَوْفَ يُرَىٰ ﴿40﴾

४०. और यह कि बेशक उसकी कोशिश जल्द देखी जायेगी।[2]

ثُمَّ يُجْزَىٰهُ الْجَزَآءَ الْأَوْفَىٰ ﴿41﴾

४१. फिर उसे पूरा-पूरा बदला दिया जायेगा।

وَأَنَّ إِلَىٰ رَبِّكَ الْمُنتَهَىٰ ﴿42﴾

४२. और यह कि आप के रब ही की तरफ़ पहुँचना है।

وَأَنَّهُۥ هُوَ أَضْحَكَ وَأَبْكَىٰ ﴿43﴾

४३. और यह कि वही हँसाता है और वही रुलाता है।

وَأَنَّهُۥ هُوَ أَمَاتَ وَأَحْيَا ﴿44﴾

४४. और यह कि वही मारता है और वही जिन्दा करता है।

---

[1] यानी जिस तरह कोई किसी दूसरे के पाप का ज़िम्मेदार नहीं होगा, इसी तरह उसे आख़िरत में फल भी उसी चीज़ का मिलेगा, जिस में उस ने अपनी मेहनत की होगी।

[2] यानी उस ने दुनिया में अच्छा या बुरा जो कुछ भी किया, छिपे या खुले तौर से किया, क़यामत के दिन आगे आ जायेगा और उस पर उसे पूरा बदला दिया जायेगा।

وَأَنَّهُ خَلَقَ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْأُنْثَىٰ (45)

४५. और यह कि उसी ने जोड़ा यानी नर-मादा पैदा किया है।

مِنْ نُطْفَةٍ إِذَا تُمْنَىٰ (46)

४६. वीर्य (नुतफ़ा) से जबकि वह टपकाया जाता है।

وَأَنَّ عَلَيْهِ النَّشْأَةَ الْأُخْرَىٰ (47)

४७. और यह कि दोबारा ज़िन्दा करना उसी की ज़िम्मेदारी है।

وَأَنَّهُ هُوَ أَغْنَىٰ وَأَقْنَىٰ (48)

४८. और यह कि वही धनवान बनाता है और धन देता है।[1]

وَأَنَّهُ هُوَ رَبُّ الشِّعْرَىٰ (49)

४९. और यह कि वही शेअ्रा (तारे) का रब है।[2]

وَأَنَّهُ أَهْلَكَ عَادًا الْأُولَىٰ (50)

५०. और यह कि उसी ने पहले आद को नष्ट (हलाक) किया है।

وَثَمُودَ فَمَا أَبْقَىٰ (51)

५१. और समूद को भी (जिन में से) एक को भी बाक़ी न रखा।

وَقَوْمَ نُوحٍ مِنْ قَبْلُ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا هُمْ أَظْلَمَ وَأَطْغَىٰ (52)

५२. और उससे पहले नूह की क़ौम को, बेशक वे बड़े ज़ालिम और उद्दण्ड (सरकश) थे।

وَالْمُؤْتَفِكَةَ أَهْوَىٰ (53)

५३. और मूतफ़िका (नगर या उल्टी हुई बस्तियों को) उसी ने उलट दिया।

فَغَشَّاهَا مَا غَشَّىٰ (54)

५४. फिर उस पर छा दिया जो छा दिया।

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكَ تَتَمَارَىٰ (55)

५५. तो हे इंसान! तू अपने रब के किस-किस उपहार (नेमत) पर झगड़ेगा?

هَٰذَا نَذِيرٌ مِنَ النُّذُرِ الْأُولَىٰ (56)

५६. यह (नबी) डराने वाले हैं, पहले के डराने वालों में से।

---

[1] अर्थात (यानी) किसी को इतना धन देता है कि उसे किसी की ज़रूरत नहीं होती और उसकी सभी ज़रूरतें पूरी हो जाती हैं। किसी को इतना धन दे देता है कि उस के पास ज़रूरत से ज़्यादा बच जाता है और उसे जमा कर के रखता है।

[2] पालनहार तो वह हर चीज़ का है, यहाँ इस तारे का नाम इसलिए लिया है कि अरब के कुछ क़बीले उसकी उपासना (इबादत) करते थे।

اَزِفَتِ الْاٰزِفَةُ ﴿57﴾

५७. आने वाली घड़ी क़रीब आ गयी है।

لَيْسَ لَهَا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ كَاشِفَةٌ ﴿58﴾

५८. अल्लाह के सिवाय उसका (मुक़र्रर समय पर खोल) दिखाने वाला दूसरा कोई नहीं।

اَفَمِنْ هٰذَا الْحَدِيْثِ تَعْجَبُوْنَ ﴿59﴾

५९. तो क्या तुम इस बात पर आश्चर्य (ताज्जुब) करते हो?

وَتَضْحَكُوْنَ وَلَا تَبْكُوْنَ ﴿60﴾

६०. और हँस रहे हो, रोते नहीं?

وَاَنْتُمْ سٰمِدُوْنَ ﴿61﴾

६१. (बल्कि) तुम खेल रहे हो।

فَاسْجُدُوْا لِلّٰهِ وَاعْبُدُوْا ﴿62﴾

६२. अब अल्लाह के सामने सज्दे करो (नत्-मस्तक हो जाओ) और (उसी की) इबादत करो।

सूरतुल क़मर-५४

سُوْرَةُ الْقَمَرِ

सूर: क़मर* मक्का में नाज़िल हुई, इस में पचपन आयतें और तीन रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

اِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَانْشَقَّ الْقَمَرُ ﴿1﴾

१. क़यामत क़रीब आ गई और चाँद फट गया।[1]

وَاِنْ يَّرَوْا اٰيَةً يُّعْرِضُوْا وَيَقُوْلُوْا سِحْرٌ مُّسْتَمِرٌّ ﴿2﴾

२. ये अगर कोई चमत्कार (मोजिज़े) देखते हैं तो मुँह फेर लेते हैं और कह देते हैं कि ये पहले से चला आता हुआ जादू है।

---

* यह भी उन सूरतों में से है जिसे रसूलुल्लाह ﷺ ईद की नमाज़ में पढ़ा करते थे, जैसाकि पहले बयान हो चुका।

[1] यह वह चमत्कार (मोजिज़ा) है जो मक्कावासियों की माँग पर दिखाया गया, चाँद के दो हिस्से हो गये यहाँ तक कि लोगों ने हिरा पहाड़ को उस के बीच देखा, यानी उसका एक हिस्सा पहाड़ के उस तरफ़ और एक हिस्सा इस तरफ़ हो गया। (सहीह बुख़ारी, मनाक़िबुल अंसार) सभी पहले और बाद के विद्वानों (आलिमों) की यही राय है। (फ़तहुल क़दीर) इमाम इब्ने कसीर लिखते हैं: "आलिमों के क़रीब इस बात पर इत्तेफ़ाक़ है कि चाँद के दो हिस्से नबी ﷺ के युग में हुए और यह आप ﷺ के स्पष्ट (वाज़ेह) चमत्कारों में से है, सही हदीस इसको वाज़ेह करती है।"

وَكَذَّبُوا وَاتَّبَعُوا أَهْوَاءَهُمْ وَكُلُّ أَمْرٍ مُسْتَقِرٌّ (3)

३. और उन्होंने झुठलाया और अपनी इच्छाओं का अनुसरण (इत्तेबा) किया और हर काम निश्चित समय पर ही निर्धारित (मुक़र्रर) है।

وَلَقَدْ جَاءَهُمْ مِنَ الْأَنْبَاءِ مَا فِيهِ مُزْدَجَرٌ (4)

४. बेशक उन के पास वे ख़बरें आ चुकी हैं जिन में डाँट-फटकार (वाली शिक्षा) है।

حِكْمَةٌ بَالِغَةٌ فَمَا تُغْنِ النُّذُرُ (5)

५. और पूरी हिक्मत की बात है, लेकिन इन डरावनी बातों ने भी कोई फ़ायेदा न दिया।[1]

فَتَوَلَّ عَنْهُمْ يَوْمَ يَدْعُ الدَّاعِ إِلَىٰ شَيْءٍ نُكُرٍ (6)

६. (तो हे नबी!) तुम उन से मुँह फेर लो जिस दिन एक पुकारने वाला नापसन्द चीज़ की तरफ़ पुकारेगा।

خُشَّعًا أَبْصَارُهُمْ يَخْرُجُونَ مِنَ الْأَجْدَاثِ كَأَنَّهُمْ جَرَادٌ مُنْتَشِرٌ (7)

७. ये झुकी आँखों से क़ब्रों से इस तरह उठ खड़े होंगे कि जैसे वह फैला हुआ टिड्डी दल है।[2]

مُهْطِعِينَ إِلَى الدَّاعِ يَقُولُ الْكَافِرُونَ هَٰذَا يَوْمٌ عَسِرٌ (8)

८. पुकारने वाले की तरफ़ दौड़ते होंगे और काफ़िर कहेंगे कि यह दिन तो बड़ा कठिन है।

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ فَكَذَّبُوا عَبْدَنَا وَقَالُوا مَجْنُونٌ وَازْدُجِرَ (9)

९. उन से पहले नूह की क़ौम ने भी हमारे बंदे को झुठलाया था और पागल बताकर झिड़क दिया था।

فَدَعَا رَبَّهُ أَنِّي مَغْلُوبٌ فَانْتَصِرْ (10)

१०. तो उस ने अपने रब से दुआ की कि मैं बेसहारा हूँ तू मेरी मदद कर।

فَفَتَحْنَا أَبْوَابَ السَّمَاءِ بِمَاءٍ مُنْهَمِرٍ (11)

११. तो हमने आकाश के दरवाज़ों को मूसलाधार बारिश से खोल दिया।[3]

---

[1] यानी अल्लाह ने जिस के लिए दुर्भाग्य (बदबख़्ती) लिख दिया है और उस के दिल पर मोहर लगा दी है, उसे पैग़म्बरों की चेतावनी (तम्बीह) क्या फ़ायेदा दे सकती है? इसे तो डराना न डरना बराबर वाली बात है।

[2] यानी क़ब्रों से निकलकर वह ऐसे फैलेंगे और हिसाब की जगह की तरफ़ इतनी तेज़ चाल से जायेंगे कि जैसे टिड्डी दल हो जो फ़ौरन अंतरिक्ष में फैल जाता हैं।

[3] مُنْهَمِر यानी बहुत बहुत ज़्यादा ज़ोरदार هَمَر बहने के मतलब में आता है। कहते हैं कि चालीस दिन तक लगातार घोर वर्षा होती रही।

وَفَجَّرْنَا الْأَرْضَ عُيُونًا فَالْتَقَى الْمَاءُ عَلَىٰ أَمْرٍ قَدْ قُدِرَ ﴿12﴾

१२. और धरती से चश्मों को जारी कर दिया तो उस काम के लिये जो तक़्दीर में लिख दिया गया था (दोनों) पानी जमा हो गया।

وَحَمَلْنَاهُ عَلَىٰ ذَاتِ أَلْوَاحٍ وَدُسُرٍ ﴿13﴾

१३. और हम ने उसे पटरों और कीलों वाली नाव पर सवार कर लिया।[1]

تَجْرِي بِأَعْيُنِنَا جَزَاءً لِمَنْ كَانَ كُفِرَ ﴿14﴾

१४. जो हमारी आँखों के सामने चल रही थी। बदला उसकी तरफ़ से जिस का कुफ़्र किया गया था।

وَلَقَدْ تَرَكْنَاهَا آيَةً فَهَلْ مِنْ مُدَّكِرٍ ﴿15﴾

१५. और बेशक हम ने इस घटना (वाक़ेआ) को निशानी बनाकर बाक़ी रखा, तो है कोई नसीहत हासिल करने वाला।

فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذُرِ ﴿16﴾

१६. तो (बताओ) मेरा अज़ाब और मेरी डराने वाली बातें कैसी रहीं?

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُدَّكِرٍ ﴿17﴾

१७. और बेशक हम ने क़ुरआन को समझने के लिए आसान कर दिया है,[2] तो क्या कोई नसीहत हासिल करने वाला है?

كَذَّبَتْ عَادٌ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذُرِ ﴿18﴾

१८. आद के समुदाय ने भी झुठलाया तो कैसा हुआ मेरा अज़ाब और मेरी डराने वाली बातें।

---

[1] دُسُرٌ (दुसुर) دِسَارٌ (दिसार) का बहुवचन (जमा) है, वह रस्सियाँ जिन से नवका के तख़्ते बाँधे गये या वह कीलें और खूँटियाँ जिन से नवका को जोड़ा गया।

[2] यानी उस के मायने और मतलब को समझना, उस से नसीहत हासिल करना और उसे याद करना हम ने आसान बना दिया है। हक़ीक़त यह है कि पाक क़ुरआन अपने चमत्कार, (मोजिज़े) असर और भाषा शैली के बिना पर सब से ऊँची किताब होने के बावजूद कोई इंसान तनिक भी ध्यान दे तो वह अरबी व्याकरण (ग्रामर) और भाषा शैली की किताबें पढ़े बिना भी उसे आसानी से समझ लेता है। इसी तरह यह दुनिया की सिर्फ़ एक किताब है जो एक-एक शब्द (लफ़्ज़) याद कर ली जाती है, नहीं तो छोटी से छोटी किताब को भी इस तरह याद कर लेना और उसे याद रखना बड़ा कठिन है, अगर इंसान अपने मन और दिमाग़ के दरवाज़े खोलकर उसे नसीहत की आँखों से पढ़े, नसीहत के कानों से सुने और समझने वाले दिल से उस पर विचार करे तो लोक-परलोक (दुनिया-आख़िरत) की ख़ुशनसीबी के दरवाज़े उस पर खुल जाते हैं और यह उस के दिल की गहराईयों में उतरकर कुफ़्र और पाप की सभी गंदगियों को साफ़ कर देता है।

१९. हम ने उन पर तेज लगातार चलने वाली हवा एक लगातार मन्हूस दिन में भेज दी।

إِنَّآ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا صَرْصَرًا فِي يَوْمِ نَحْسٍ مُّسْتَمِرٍّ (19)

२०. जो लोगों को उठा-उठाकर पटक देती थी, जैसेंकि वे जड़ से कटे खजूर के पेड़ हैं।

تَنزِعُ النَّاسَ كَأَنَّهُمْ أَعْجَازُ نَخْلٍ مُّنقَعِرٍ (20)

२१. तो कैसा रहा मेरा अज़ाब और मेरा डराना?

فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذُرِ (21)

२२. और बेशक हम ने क़ुरआन को नसीहत के लिए आसान कर दिया है, तो क्या है कोई नसीहत हासिल करने वाला?

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ (22)

२३. समूद के समुदाय ने (भी) डराने वालों को झुठलाया।

كَذَّبَتْ ثَمُودُ بِالنُّذُرِ (23)

२४. और कहने लगे कि क्या हमीं में से एक इंसान का हम अनुगमन (पैरवी) करने लगें? तब तो हम ज़रूर बुराई और पागलपन में पड़े हुए होंगे।

فَقَالُوا أَبَشَرًا مِّنَّا وَاحِدًا نَّتَّبِعُهُ إِنَّا إِذًا لَّفِي ضَلَالٍ وَسُعُرٍ (24)

२५. क्या हम सब के बीच सिर्फ़ उसी पर प्रकाशना (वह्यी) नाज़िल की गयी? नहीं, बल्कि वह झूठा गर्व (फ़ख़) करने वाला है।

أَأُلْقِيَ الذِّكْرُ عَلَيْهِ مِن بَيْنِنَا بَلْ هُوَ كَذَّابٌ أَشِرٌ (25)

२६. अब सब जान लेंगे कल को कि कौन झूठा और घमंडी था?

سَيَعْلَمُونَ غَدًا مَّنِ الْكَذَّابُ الْأَشِرُ (26)

२७. बेशक हम उनकी परीक्षा के लिए ऊँटनी भेजेंगे, तो (हे स्वालेह!) तू उनका इंतेज़ार कर और सब्र कर।

إِنَّا مُرْسِلُو النَّاقَةِ فِتْنَةً لَّهُمْ فَارْتَقِبْهُمْ وَاصْطَبِرْ (27)

२८. और उन्हें ख़बर कर दे कि पानी उन में बटवारा है, हर एक अपने फेरे पर हाज़िर होगा।[1]

وَنَبِّئْهُمْ أَنَّ الْمَاءَ قِسْمَةٌ بَيْنَهُمْ كُلُّ شِرْبٍ مُّحْتَضَرٌ (28)

२९. तो उन्होंने अपने साथी को पुकारा, जिस ने (ऊँटनी पर) हमला किया और (उसकी) कोचें काट दीं।

فَنَادَوْا صَاحِبَهُمْ فَتَعَاطَىٰ فَعَقَرَ (29)

[1] मुराद है कि हर एक का हिस्सा उस के साथ ही ख़ास है जो अपनी-अपनी बारी पर हाज़िर होकर हासिल करे, दूसरा उस दिन न आये, شِرْب (शिर्ब) पानी का हिस्सा।

فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذُرِ ﴿30﴾

३०. तो कैसा हुआ मेरा अज़ाब और मेरा डराना।

إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ صَيْحَةً وَاحِدَةً فَكَانُوا كَهَشِيمِ الْمُحْتَظِرِ ﴿31﴾

३१. हम ने उन पर एक चीख़ (तेज आवाज़) भेजी तो वे ऐसे हो गये जैसे बाड़ बनाने वाले की रौंदी हुई घास।[1]

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُدَّكِرٍ ﴿32﴾

३२. और हम ने नसीहत हासिल करने के लिए क़ुरआन को आसान कर दिया है, तो क्या है कोई नसीहत हासिल करने वाला?

كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوطٍ بِالنُّذُرِ ﴿33﴾

३३. लूत के समुदाय (क़ौम) ने भी डराने वालों को झुठलाया।

إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ حَاصِبًا إِلَّا آلَ لُوطٍ نَجَّيْنَاهُمْ بِسَحَرٍ ﴿34﴾

३४. बेशक हम ने उन पर पत्थर की बारिश करने वाली हवा भेजी, सिवाय लूत (عليه السلام) के परिवार वालों के, उन्हें सुबह के वक़्त[2] हम ने सुरक्षा (मुक्ति) अता कर दी।[3]

نِعْمَةً مِنْ عِنْدِنَا كَذَلِكَ نَجْزِي مَنْ شَكَرَ ﴿35﴾

३५. अपनी कृपा (फ़ज़्ल) से! हर शुक्रगुज़ार को हम इसी तरह बदला देते हैं।

وَلَقَدْ أَنْذَرَهُمْ بَطْشَتَنَا فَتَمَارَوْا بِالنُّذُرِ ﴿36﴾

३६. बेशक उस (लूत) ने उन्हें हमारी पकड़ से डराया था, लेकिन उन्होंने डराने वालों के बारे में शक और शुब्हा और झगड़ा किया।

وَلَقَدْ رَاوَدُوهُ عَنْ ضَيْفِهِ فَطَمَسْنَا أَعْيُنَهُمْ فَذُوقُوا عَذَابِي وَنُذُرِ ﴿37﴾

३७. और लूत (عليه السلام) को उन के मेहमानों के बारे में बहलाना चाहा तो हम ने उनकी आँखे अंधी कर दीं, (और कह दिया) मेरा अज़ाब और मेरा डराना चखो।

---

[1] حَظِيرَة (हज़ीरह) مَحْظُورَة (महज़ूरह) के मतलब में है, यानी बाड़ जो सूखी लकड़ियों और झाड़ियों से जानवरों के लिए बनाई जाती है। هَشِيم (हशीम) सूखी घास या कटी हुई सूखी खेती यानी जैसे एक बाड़ बनाने वाले की सूखी लकड़ियाँ और झाड़ियाँ लगातार रौंदे जाने से चूरा-चूरा हो जाती हैं ऐसे ही वह हमारे अज़ाब से चूर-चूर हो गये।

[2] आले लूत से मुराद ख़ुद ईशदूत लूत عليه السلام और उन पर ईमान लाने वाले लोग हैं, जिन में लूत की पत्नी शामिल नहीं, क्योंकि वह ईमान नहीं लाई थी। हाँ, लूत की दो बेटियाँ उन के साथ थीं, जिनको नजात दी गई। سحر (सहर) से मुराद रात का आख़िरी हिस्सा है।

[3] यानी उनको अज़ाब से बचाना हमारी दया (रहमत) और अनुग्रह (फ़ज़्ल) था जो उन पर हुआ।

وَلَقَدْ صَبَّحَهُم بُكْرَةً عَذَابٌ مُّسْتَقِرٌّ ﴿38﴾

३८. और तय बात है कि उन्हें सुबह ही एक जगह पर पकड़ने वाले निर्धारित (मुक़र्रर) अज़ाब ने बरबाद कर दिया।

فَذُوقُوا عَذَابِي وَنُذُرِ ﴿39﴾

३९. तो मेरे अज़ाब और मेरे डराने (चेतावनी) का मज़ा चखो।

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ ﴿40﴾

४०. और बेशक हम ने क़ुरआन को शिक्षा और नसीहत के लिए आसान कर दिया है,[1] तो क्या है कोई नसीहत हासिल करने वाला?

وَلَقَدْ جَاءَ آلَ فِرْعَوْنَ النُّذُرُ ﴿41﴾

४१. और फ़िरऔनियों के पास भी डराने वाले आये।

كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا كُلِّهَا فَأَخَذْنَاهُمْ أَخْذَ عَزِيزٍ مُّقْتَدِرٍ ﴿42﴾

४२. उन्होंने हमारी सभी निशानियों को झुठलाया, तो हम ने उन्हें बड़ा ज़बरदस्त और शक्तिशाली पकड़ने वाले की तरह पकड़ लिया।

أَكُفَّارُكُمْ خَيْرٌ مِّنْ أُولَٰئِكُمْ أَمْ لَكُم بَرَاءَةٌ فِي الزُّبُرِ ﴿43﴾

४३. (हे मक्कावालो!) क्या तुम्हारे काफ़िर उन काफ़िरों से कुछ बेहतर हैं? या तुम्हारे लिए पहले की किताबों में छुटकारा लिखा हुआ है?[2]

أَمْ يَقُولُونَ نَحْنُ جَمِيعٌ مُّنتَصِرٌ ﴿44﴾

४४. क्या यह कहते हैं कि हम ग़ालिब होने वाले लोग (जमाअत) हैं।

سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَيُوَلُّونَ الدُّبُرَ ﴿45﴾

४५. क़रीब ही यह समूह पराजित किया जायेगा और पीठ दिखाकर भागेगा।

بَلِ السَّاعَةُ مَوْعِدُهُمْ وَالسَّاعَةُ أَدْهَىٰ وَأَمَرُّ ﴿46﴾

४६. बल्कि क़यामत (प्रलय) की घड़ी उन के वादा का समय है, और क़यामत बहुत कठिन और बड़ी कड़वी चीज़ है।[3]

---

[1] इस सूरह में पाक क़ुरआन को आसान बनाने की चर्चा बार-बार करने से उद्देश्य (मक़सद) यह है कि क़ुरआन को याद कर लेना और समझने को आसान कर देना अल्लाह का बड़ा अनुग्रह (एहसान) है। उस के शुक्रिये से इंसान को कभी मुँह फेरने वाला नहीं होना चाहिए।

[2] زُبُر (ज़ुबुर) से मुराद पिछले अम्बिया (ईशदूतों) पर नाज़िल किताबें (धर्मशास्त्र) हैं, यानी क्या तुम्हारे बारे में पहले की नाज़िल किताबों में साफ़ कर दिया गया है कि यह अरब या क़ुरैश जो इच्छा हो करते रहें, उन पर कोई प्रभावशाली (ग़ालिब) नहीं होगा।

[3] ادهى (अदहा) دَهَاء (दहाअ) से बना है, घोर अपमानकारी (सख़्त ज़लील करने वाला)। أَمَرّ (अमर्र)

إِنَّ الْمُجْرِمِينَ فِي ضَلَٰلٍ وَسُعُرٍ ﴿47﴾

४७. बेशक पापी (मुजरिम) भटकावे में और यातना में हैं।

يَوْمَ يُسْحَبُونَ فِي النَّارِ عَلَىٰ وُجُوهِهِمْ ذُوقُوا مَسَّ سَقَرَ ﴿٤٨﴾

४८. जिस दिन वे अपने मुंह के बल आग में घसीटे जायेंगे (और उन से कहा जायेगा) नरक की आग लगने का मज़ा चखो।[1]

إِنَّا كُلَّ شَيْءٍ خَلَقْنَٰهُ بِقَدَرٍ ﴿49﴾

४९. बेशक हम ने हर चीज़ को एक (निर्धारित) अंदाज़ा पर पैदा किया है।[2]

وَمَا أَمْرُنَا إِلَّا وَٰحِدَةٌ كَلَمْحٍ بِالْبَصَرِ ﴿50﴾

५०. और हमारा हुक्म केवल एक बार (का एक लफ़्ज़) ही होता है, जैसे पलक का झपकना।

وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا أَشْيَاعَكُمْ فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ ﴿51﴾

५१. और हम ने तुम जैसे बहुतों को हलाक कर दिया है, तो कोई है नसीहत हासिल करने वाला।

وَكُلُّ شَيْءٍ فَعَلُوهُ فِي الزُّبُرِ ﴿52﴾

५२. और जो कुछ उन्होंने (कर्म) किये हैं सब कर्मपत्र (आमाल नामा) में लिखे हुए हैं।

وَكُلُّ صَغِيرٍ وَكَبِيرٍ مُّسْتَطَرٌ ﴿53﴾

५३. (इसी तरह) हर छोटी-बड़ी बात लिखी हुई है।

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّٰتٍ وَنَهَرٍ ﴿54﴾

५४. बेशक परहेज़गार लोग जन्नत और नहरों में होंगे।

فِي مَقْعَدِ صِدْقٍ عِندَ مَلِيكٍ مُّقْتَدِرٍ ﴿55﴾

५५. सच्चाई और इज़्ज़त की बैठक में सामर्थ्य (क़ुदरत) वाले मालिक के पास।

مَرَارَةٌ (मरारह) से है, बहुत कडुवा, यानी यह दुनिया में जो क़त्ल किये गये, बंदी बनाये गये आदि, उन का आख़िरी अज़ाब नहीं, बल्कि और भी कड़ी यातनायें उन्हें क़यामत के दिन दी जायेंगी जिस का उन से वादा किया जाता है।

[1] سَقَرَ (सक़र) भी नरक का नाम है, यानी उसकी गर्मी और अज़ाब की कड़ाई का मज़ा चखो।

[2] अइम्मये सुन्नत (इस्लामी धर्म के विशेषज्ञों) ने इस आयत और इस तरह की दूसरी आयतों से अल्लाह के क़दर (क़िस्मत के लिखे) को साबित किया है, जिसका मतलब यह है कि अल्लाह तआला को सृष्टि (मख़लूक़) के पैदा करने से पहले ही सबका इल्म था और उस ने सब की तक़दीर लिख दिया है और क़दिया सम्प्रदाय (फ़िर्क़ा) का खण्डन (तरदीद) किया है जो सहाबा के युग (दौर) के आख़िर में ज़ाहिर हुआ।

सूरतुर्रहमान-५५

सूरः रहमान* मदीने में नाज़िल हुई, इस में अट्ठहत्तर आयतें और तीन रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

१. दयालु (रहमान) ने।

२. क़ुरआन सिखाया।

३. उसी ने इंसान को पैदा किया।

४. उसे बोलना सिखाया।

५. सूरज और चाँद (निर्धारित) हिसाब से हैं।[1]

६. और तारे और पेड़ दोनों सज्दा करते हैं।

७. उसी ने आसमान को ऊँचा किया और उसी ने तराज़ू रखी।

८. ताकि तुम तौलने में हद पार (उलंघन) न करो।

९. और इंसाफ़ के साथ तौल सही रखो और तौल में कम न दो।

१०. और उसी ने सृष्टि (मख़लूक़) के लिए धरती बिछायी।

سُوْرَةُ الرَّحْمٰنِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلرَّحْمٰنُ (1)

عَلَّمَ الْقُرْاٰنَ (2)

خَلَقَ الْاِنْسَانَ (3)

عَلَّمَهُ الْبَيَانَ (4)

اَلشَّمْسُ وَالْقَمَرُ بِحُسْبَانٍ (5)

وَّالنَّجْمُ وَالشَّجَرُ يَسْجُدٰنِ (6)

وَالسَّمَآءَ رَفَعَهَا وَوَضَعَ الْمِيْزَانَ (7)

اَلَّا تَطْغَوْا فِي الْمِيْزَانِ (8)

وَاَقِيْمُوا الْوَزْنَ بِالْقِسْطِ وَلَا تُخْسِرُوا الْمِيْزَانَ (9)

وَالْاَرْضَ وَضَعَهَا لِلْاَنَامِ (10)

---

* इस सूरः को लोगों ने मदनी (मदीने में नाज़िल) माना है, लेकिन सही यह है कि यह मक्की (मक्के में नाज़िल) है। (फ़तहुल क़दीर)

[1] यानी अल्लाह के मुक़र्रर किये हिसाब से अपनी-अपनी जगहों पर चल रहे हैं, उसके ख़िलाफ़ नहीं करते।

११. जिस में मेवे हैं और गुच्छे वाले खजूर के पेड़ हैं ।[1]

فِيهَا فَاكِهَةٌ وَالنَّخْلُ ذَاتُ الْأَكْمَامِ ﴿11﴾

१२. और भूसा वाला अनाज है[2] और सुगन्धित (ख़ुश्बूदार) फूल हैं ।

وَالْحَبُّ ذُو الْعَصْفِ وَالرَّيْحَانُ ﴿12﴾

१३. तो (हे इंसानों और जिन्नो!) तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे ।[3]

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿13﴾

१४. उस ने इंसान को खंखनाती मिट्टी से पैदा किया जो ठिकरी की तरह थी ।[4]

خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ كَالْفَخَّارِ ﴿14﴾

१५. और जिन्नात को आग की लपट से पैदा किया ।

وَخَلَقَ الْجَانَّ مِنْ مَارِجٍ مِنْ نَارٍ ﴿15﴾

१६. तो (हे इंसानों और जिन्नो!) तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे ।[5]

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿16﴾

१७. वह रब है दोनों पूरबों और दोनों पश्चिमों का ।[6]

رَبُّ الْمَشْرِقَيْنِ وَرَبُّ الْمَغْرِبَيْنِ ﴿17﴾

---

[1] أَكْمَام (अकमाम) كِمّ (किम्म) का बहुवचन (जमा) है, खजूर पर चढ़ा हुआ आवरण (पर्दा) ।

[2] حَبّ हब्ब (दाना) से मुराद हर वह खाने वाली चीज है जो इंसान और जानवर खाते हैं, सूखकर उसका पौधा भूसा बन जाता है जो जानवरों के काम आता है ।

[3] यह इंसान और दानव (जिन्न) दोनों से संबोधन (ख़िताब) है । अल्लाह अपने एहसानों को गिना कर उन से सवाल कर रहा है । यह बार-बार कहना उस इंसान की तरह है जो किसी पर लगातार एहसान करे, किन्तु वह उस के एहसान का इंकार करता हो, जैसे कहे कि मैंने तेरा अमुक-अमुक (फ़्लाँ-फ़्लाँ) काम किया, क्या तू इंकार करता है? अमुक-अमुक चीज तुझे दी, क्या तुझे याद नहीं? तुझ पर अमुक एहसान किया, क्या तुझे हमारा तनिक भी ध्यान नहीं? (फ़तहुल क़दीर)

[4] صَلْصَال (सल्साल) सूखी मिट्टी जिस में आवाज हो । فَخَّار (फ़ख़्ख़ार) आग में पकी मिट्टी, जिसे ठीकरी कहते हैं । उस इंसान से मुराद हज़रत आदम हैं, जिनका पहले मिट्टी से पुतला बनाया गया और फिर अल्लाह ने उस में आत्मा (रूहें) फूँकी, फिर उनकी बायीं पसली से 'हव्वा' को पैदा किया, फिर इन दोनों से इंसानी वंश चला ।

[5] यानी तुम्हारी यह पैदाईश और फिर तुम से ज़्यादा वंशों की पैदाईश और अधिकता भी अल्लाह के एहसानों में से है, क्या तुम इस एहसान का इंकार करोगे?

[6] एक गर्मी का पूरब और एक जाड़े का पूरब, इसी तरह पश्चिम है । इसलिए दोनों को द्विवचन

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿18﴾

१८. तो (हे इंसानों और जिन्नो!) तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे।

مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ يَلْتَقِيٰنِ ﴿19﴾

१९. उस ने दो दरिया प्रवाहित (जारी) कर दिये जो एक-दूसरे से मिल जाते हैं।

بَيْنَهُمَا بَرْزَخٌ لَّا يَبْغِيٰنِ ﴿20﴾

२०. उन दोनों के बीच एक आड़ है कि उस से बढ़ नहीं सकते।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿21﴾

२१. तो (हे इंसानों और जिन्नो!) तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे।

يَخْرُجُ مِنْهُمَا اللُّؤْلُؤُ وَالْمَرْجَانُ ﴿22﴾

२२. उन दोनों में से मोती और मूंगे निकलते हैं।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿23﴾

२३. तो (हे इंसानों और जिन्नो!) तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे।

وَلَهُ الْجَوَارِ الْمُنْشَئٰتُ فِي الْبَحْرِ كَالْاَعْلَامِ ﴿24﴾

२४. और अल्लाह ही की (मिल्कियत में) हैं वह (जहाज) जो समुद्रों में पहाड़ की तरह ऊंचे (खड़े हुए) चल रहे हैं।[1]

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿25﴾

२५. तो (हे इंसानों और जिन्नो!) तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे।[2]

كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ ﴿26﴾

२६. धरती पर जो कुछ भी है सब नश्वर (फ़ानी) है।

وَّيَبْقٰى وَجْهُ رَبِّكَ ذُو الْجَلٰلِ وَالْاِكْرَامِ ﴿27﴾

२७. केवल तेरे रब का मुंह (वजूद) जो महान और बाइज़्ज़त है, बाक़ी रह जायेगा।

(तसनीया) बयान किया है। ऋतुओं (मौसम) के अनुसार पूरब और पश्चिम के भिन्न होने में भी इस में जिन्नों और इंसानों के बहुत से फ़ायदे हैं, इसलिए इसे भी एहसान कहा गया है।

[1] الجوار (अलजवार) جارية (जारियह) चलने वाली का बहुवचन (जमा) है और छिपे मौसूफ़ السفن (नवकायें) का विशेषण (सिफ़त) है। منشآت का मतलब مرفوعات है, ऊँची की हुई, मतलब पाल (बादबान) है, जो हवा पोतों में झंडों के बराबर ऊपर और ऊँची बनाई जाती हैं। कुछ ने इसका मतलब निर्मित (मस्नूअ) किया है, यानी अल्लाह की बनाई हुई जो समुद्रों में चलती हैं।

[2] इन के द्वारा (ज़रिये) भी यातायात और भारवाहन की जो सहूलतें हासिल हैं उसे बताने की ज़रूरत नहीं, इसलिए यह भी अल्लाह की बड़ी अनुकम्पा (नेमत) है।

२८. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे।

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿28﴾

२९. सब आकाश और धरती वाले उसी से मांगते हैं, हर दिन वह एक काम में है।[1]

يَسْئَلُهُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۚ كُلَّ يَوْمٍ هُوَ فِي شَأْنٍ ﴿29﴾

३०. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे।

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿30﴾

३१. (हे जिन्नों और इंसानों के गिरोहो!) जल्द ही हम तुम्हारी तरफ़ पूरी तरह आकर्षित (मुतवज्जिह) हो जायेंगे।[2]

سَنَفْرُغُ لَكُمْ أَيُّهَ الثَّقَلٰنِ ﴿31﴾

३२. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे।

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿32﴾

३३. (हे जिन्नों और इंसानों के गिरोह!) अगर तुम में आकाशों और धरती के किनारों से निकलने की ताक़त है तो निकल भागो, बिना ग़ल्बा (और ताक़त) के तुम नही निकल सकते।[3]

يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ إِنِ اسْتَطَعْتُمْ أَنْ تَنْفُذُوا مِنْ أَقْطَارِ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ فَانْفُذُوا ۚ لَا تَنْفُذُونَ إِلَّا بِسُلْطٰنٍ ﴿33﴾

---

[1] प्रतिदिन (हर दिन) का मायने हर पल (क्षण)। شان (शान) का मतलब काम और विषय, यानी हर समय वह कुछ न कुछ करता रहता है, किसी को रोगी बना रहा है तो किसी को सेहतमंद, किसी को अमीर बना रहा है तो किसी अमीर को ग़रीब, किसी को रंक (भिखारी) से राजा तो किसी को राजा से रंक, किसी को ऊँचा मनसब (पदासीन) दे रहा है तो किसी को नीचे गिरा रहा है और किसी को फ़ना (नास्ति) और फ़ना को बक़ा (आस्ति) दे रहा है आदि (वगैरह)। संक्षेप (मुख़्तसर) में दुनिया में यह सब बदलाव उसी के हुक्म और मर्ज़ी से हो रहे हैं और रात दिन का कोई ऐसा पल नहीं जो उसकी शान से ख़ाली हो।

[2] इसका मतलब यह नहीं कि अल्लाह को फ़राग़त (अवकाश) नहीं, बल्कि यह मुहावरे के रूप में कहा गया है, जिसका मक़सद (उद्देश्य) धमकी देना और फटकारना है। ثقلان सक़लान (जिन्न और इंसान को) इसलिए कहा गया है कि उन्हें शरीअत के पालन का पाबंद किया गया है, इस रुकावट और भार से दूसरी मख़्लूक़ (सृष्टि) अलग है।

[3] अल्लाह की लिखी तक़दीर और फ़ैसले से बचकर तुम कहीं भाग सकते हो तो चले जाओ, लेकिन यह ताक़त किस में है, और भाग कर जायेगा कहाँ? कोई जगह ऐसी है जो अल्लाह के अधिकार से बाहर हो? यह भी धमकी है जो उपर बयान की गई धमकी की तरह एहसान है। कुछ ने कहा कि यह महशर के मैदान में कहा जायेगा जब फ़रिश्ते हर तरफ से लोगों को घेर रखे होंगे, दोनों ही मायने अपनी जगह पर सही हैं।

३४. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे ।

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ (34)

३५. तुम पर आग के शोले और धुआँ छोड़ा जायेगा फिर तुम मुक़ाबला न कर सकोगे ।

يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا شُوَاظٌ مِّن نَّارٍ وَنُحَاسٌ فَلَا تَنتَصِرَانِ (35)

३६. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे ।

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ (36)

३७. फिर जबकि आकाश फटकर लाल हो जायेगा, जैसा कि लाल (मुलायम) चमड़ा हो ।[1]

فَإِذَا انشَقَّتِ السَّمَاءُ فَكَانَتْ وَرْدَةً كَالدِّهَانِ (37)

३८. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे ।

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ (38)

३९. उस दिन किसी इंसान और किसी जिन्न से उस के पापों की पूछताछ न की जायेगी ।

فَيَوْمَئِذٍ لَّا يُسْأَلُ عَن ذَنبِهِ إِنسٌ وَلَا جَانٌّ (39)

४०. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे ।

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ (40)

४१. पापी केवल अपने हुलिया से ही पहचान लिये जायेंगे[2] और उन के माथों के बाल और पैर पकड़ लिए जायेंगे ।

يُعْرَفُ الْمُجْرِمُونَ بِسِيمَاهُمْ فَيُؤْخَذُ بِالنَّوَاصِي وَالْأَقْدَامِ (41)

४२. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे ।

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ (42)

४३. यह है वह नरक जिसे अपराधी (मुजरिम) झूठा मानते थे ।

هَٰذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي يُكَذِّبُ بِهَا الْمُجْرِمُونَ (43)

---

[1] क़यामत (प्रलय) के दिन आसमान फट जायेगा, ज़मीन पर फ़रिश्ते उतर आयेंगे, उस दिन यह आसमान जहन्नम की आग की सख़्त तपिश (ताप) से पिघलकर लाल चमड़े की तरह हो जायेगा, دهان लाल चमड़ा ।

[2] यानी जिस तरह ईमानवालों का निशान होगा कि उन के वज़ू के अंग चमकते होंगे, उसी तरह पापियों के मुँह काले होंगे, आँखें नीली और वे डरे हुए होंगे ।

يَطُوفُونَ بَيْنَهَا وَبَيْنَ حَمِيمٍ آنٍ ﴿44﴾

४४. उस के और गर्म उबलते पानी के बीच चक्कर खायेंगे।

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿45﴾

४५. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे।

وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ جَنَّتَانِ ﴿46﴾

४६. और उस इंसान के लिए जो अपने रब के सामने खड़ा होने से डरा, दो जन्नत हैं।[1]

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿47﴾

४७. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे।

ذَوَاتَا أَفْنَانٍ ﴿48﴾

४८. दोनों जन्नतें बहुत डालियों (और शाखाओं) वाली हैं।

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿49﴾

४९. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे।

فِيهِمَا عَيْنَانِ تَجْرِيَانِ ﴿50﴾

५०. उन दोनों (स्वर्गों) में दो बहने वाले चश्मे (जलस्रोत) हैं।[2]

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿51﴾

५१. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे।

فِيهِمَا مِنْ كُلِّ فَاكِهَةٍ زَوْجَانِ ﴿52﴾

५२. उन दोनों (स्वर्गों) में हर तरह के मेवों के जोड़े (दो तरह) होंगे।

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿53﴾

५३. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे।

مُتَّكِئِينَ عَلَىٰ فُرُشٍ بَطَائِنُهَا مِنْ إِسْتَبْرَقٍ ۚ وَجَنَى الْجَنَّتَيْنِ دَانٍ ﴿54﴾

५४. जन्नत में रहने वाले ऐसे फ़र्शों पर तकिये लगाये हुए होंगे जिन के अस्तर मोटे रेशम के होंगे, और उन दोनों जन्नतों के मेवे बहुत क़रीब होंगे।

[1] हदीस में आता है कि दो बाग़ चाँदी के हैं जिन के बर्तन और सभी चीजें चाँदी की होंगी और दो बाग़ सोने के हैं और उस के बर्तन और सब चीजें सोने ही की होंगी। (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूरः अर्रहमान) कुछ कथनों (हदीसों) में है कि सोने के बाग़ ख़ास ईमानवालों (समीपवर्तियों) के लिए होंगे और चाँदी के बाग़ आम ईमानवालों के लिए होंगे। (इब्ने कसीर)

[2] एक का नाम 'तस्नीम' और दूसरे का 'सल्सबील' है।

فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿55﴾

५५. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे।

فِيْهِنَّ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ ۙ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّ ﴿56﴾

५६. वहाँ (शर्मीली) नीची निगाहें वाली हूरें हैं, जिन्हें उन से पहले किसी जिन्न और इंसान ने हाथ न लगाया होगा।[1]

فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿57﴾

५७. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे।

كَاَنَّهُنَّ الْيَاقُوْتُ وَالْمَرْجَانُ ﴿58﴾

५८. वे (हूरें) मणि (याक़ूत) और मूंगे की तरह होंगी।

فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿59﴾

५९. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे।

هَلْ جَزَآءُ الْاِحْسَانِ اِلَّا الْاِحْسَانُ ﴿60﴾

६०. एहसान का बदला एहसान (प्रतिफल) के सिवाय क्या है।[2]

فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿61﴾

६१. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे।

وَمِنْ دُوْنِهِمَا جَنَّتٰنِ ﴿62﴾

६२. और उन के सिवाय दो जन्नतें और हैं?[3]

فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿63﴾

६३. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे।

مُدْهَآمَّتٰنِ ﴿64﴾

६४. जो दोनों गाढ़े हरे रंग की स्याही मायल हैं।

---

[1] यानी कुंवारी होंगी, इस से पहले वह किसी के विवाह में नहीं रही होंगी, यह आयत और इस से पहले की कुछ आयतों से साफ़ तौर से मालूम होता है कि जो जिन्न ईमानवाले होंगे वे भी ईमान वाले इंसानों की तरह जन्नत में जायेंगे, और उन के लिए भी वही होगा जो दूसरे ईमानवालों के लिए होगा।

[2] पहले एहसान से मुराद नेक काम और अल्लाह के हुक्म का पालन (पैरवी) है और दूसरे एहसान से उसका बदला यानी जन्नत और उसकी सुख-सुविधायें (ऐशो आराम) हैं।

[3] دُونِهِمَا से यह मतलब भी निकाला गया है कि यह दो बाग़ फ़ज़ीलत और अज़मत में पहले दो बाग़ों से, जिनकी चर्चा आयत न॰ ४६ में गुज़री, कमतर होंगे।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿65﴾

६५. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे।

فِيْهِمَا عَيْنٰنِ نَضَّاخَتٰنِ ﴿66﴾

६६. उन में दो (तेज़ चाल से) उबलने वाले जलस्रोत (चश्में) हैं।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿67﴾

६७. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे।

فِيْهِمَا فَاكِهَةٌ وَّنَخْلٌ وَّرُمَّانٌ ﴿68﴾

६८. उन दोनों में मेवे और खजूर और अनार होंगे।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿69﴾

६९. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे।

فِيْهِنَّ خَيْرٰتٌ حِسَانٌ ﴿70﴾

७०. उन में अच्छे चरित्र (किरदार) वाली ख़ूबसूरत औरतें हैं।[1]

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿71﴾

७१. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे।

حُوْرٌ مَّقْصُوْرٰتٌ فِى الْخِيَامِ ﴿72﴾

७२. (गोरे रंग की) हूरें (अप्सरायें) जन्नत के ख़ेमों में रहने वाली हैं।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿73﴾

७३. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे।

لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّ ﴿74﴾

७४. उन (हूरों) को कोई इंसान और जिन्न ने इस से पहले हाथ नहीं लगाया (उन से नहीं मिला)।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿75﴾

७५. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे।

---

[1] خَيرات से मुराद अख़लाक़ (आचरण) और किरदार (स्वभाव) की अच्छाईयाँ है और حِسان का मतलब ख़ूबसूरती और ज़ीनत (शोभा) में बेमिसाल।

٧६. हरे गद्दों और सुन्दर बिछौनों पर तकिये लगाये होंगे ।[1]

مُتَّكِـِٔيْنَ عَلٰى رَفْرَفٍ خُضْرٍ وَّعَبْقَرِيٍّ حِسَانٍ ﴿76﴾

७७. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे ।[2]

فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿77﴾

७८. बड़ा शुभ है तेरे प्रतापवान (जलाल वाले) और इज़्ज़त वाले रब का नाम ।

تَبٰرَكَ اسْمُ رَبِّكَ ذِى الْجَلٰلِ وَالْاِكْرَامِ ﴿78﴾

सूरतुल वाक़िअ:-५६

سُوْرَةُ الْوَاقِعَةِ

सूर: वाक़िअ:* मक्का में नाज़िल हुई और इस में छियानवे आयतें और तीन रूकूअ हैं ।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है ।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. जब क़यामत (प्रलय) क़ायम हो जायेगी ।

اِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ﴿1﴾

२. जिस के घटित होने में कोई झूठ नहीं ।

لَيْسَ لِوَقْعَتِهَا كَاذِبَةٌ ﴿2﴾

३. वह ऊँच-नीच करने वाली होगी ।

خَافِضَةٌ رَّافِعَةٌ ﴿3﴾

४. जबकि धरती भूकम्प (ज़लज़ला) के साथ हिला दी जायेगी ।

اِذَا رُجَّتِ الْاَرْضُ رَجًّا ﴿4﴾

---

[1] رَفْرَف (रफ़रफ़) गद्दा, ग़ालीचा या इस तरह का अच्छा बिछौना, عَبْقَرِي (अबक़री) हर अच्छी और क़ीमती चीज़ को कहा जाता है । नबी ﷺ ने यह शब्द हज़रत उमर के लिये इस्तेमाल किया । «فَلَمْ أَرَ عَبْقَرِيًّا يَفْرِي فَرِيَّهُ» "मैंने कोई अबक़री (श्रेष्ठ) ऐसा नहीं देखा जो उमर की तरह काम करता हो ।" (सहीह अल-बुख़ारी, किताबुल मनाक़िब)

[2] यह आयत इस सूर: में ३१ वार आई है, अल्लाह ने इस आयत में अपने कई तरह के उपहारों (नेमतों) की चर्चा की है, और हर एक या कुछ उपहारों की चर्चा के बाद यह सवाल किया है ।

* इस सूर: के बारे में मशहूर है कि यह सूरतुल ग़िना (सम्पन्नता की सूर:) है और जो इंसान इसे हर रात को पढ़ेगा उसे कभी भूखमरी नहीं आयेगी । किन्तु हक़ीक़त में इस सूर: के महत्व (अहमियत) में कोई सहीह हदीस नहीं है, हर रात पढ़ने तथा बच्चों को सिखाने की हदीसें भी ज़ईफ़ बल्कि बनावटी हैं । देखिये (अल-अहादीसुज़ ज़ईफ़ा, लिल अलबानी हदीस न॰ २८९, २९०, भाग १\४५७)

وَّبُسَّتِ الْجِبَالُ بَسًّا ⑤

५. और पहाड़ बिल्कुल कण-कण (रेजा-रेजा) कर दिये जायेंगे।

فَكَانَتْ هَبَآءً مُّنْۢبَثًّا ⑥

६. फिर वह बिखरी धूल की तरह हो जायेंगे।

وَّكُنْتُمْ اَزْوَاجًا ثَلٰثَةً ⑦

७. और तुम तीन गुटों में बँट जाओगे।

فَاَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ۙ مَآ اَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ⑧

८. तो दाहिने हाथ वाले कैसे अच्छे हैं, दाहिने हाथ वाले।[1]

وَاَصْحٰبُ الْمَشْئَمَةِ ۙ مَآ اَصْحٰبُ الْمَشْئَمَةِ ⑨

९. और बायें हाथ वाले, क्या हाल है बायें हाथ वालों का।[2]

وَالسّٰبِقُوْنَ السّٰبِقُوْنَ ⑩

१०. और जो आगे वाले हैं वे तो आगे वाले ही हैं।[3]

اُولٰٓئِكَ الْمُقَرَّبُوْنَ ⑪

११. वह बिल्कुल नजदीकी हासिल (प्राप्त) किये हुए हैं।

فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ⑫

१२. ऐश्व व आराम वाले स्वर्गों में हैं।

ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ⑬

१३. (बहुत बड़ा) गुट तो पहले लोगों में से होगा।

وَقَلِيْلٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ ⑭

१४. और थोड़े से पिछले लोगों में से।[4]

عَلٰى سُرُرٍ مَّوْضُوْنَةٍ ⑮

१५. (ये लोग) सोने के तारों से बुने हुए तख़्तों पर।

---

[1] इस से साधारण (आम) ईमानवाले मुराद हैं जिन को उन के कर्मपत्र (आमालनामा) दायें हाथ में दिये जायेंगे, जो उनकी ख़ुशनसीबी का निशान होगा।

[2] इस से अभिप्राय (मुराद) काफ़िर हैं, जिनको उन के आमालनामा बायें हाथ में दिये जायेंगे।

[3] इन से मुराद ख़ास ईमान वाले हैं। यह तीसरा प्रकार (क़िस्म) है, जो ईमान लाने में आगे और नेकी के कामों में बढ़ चढ़कर हिस्सा लेने वाले हैं, अल्लाह उन्हें ख़ास समीपता (नज़दीकी) देगा। यह वाक्य (जुमला) ऐसा ही है जैसे बोलते हैं कि तू तू है और ज़ैद ज़ैद, इस में जैसाकि ज़ैद की अहमियत और उसकी प्रधानता (अज़मत) का बयान है।

[4] ثُلَّةٌ (सुल्लः) उस बड़े गिरोह को कहा जाता है जिसकी गिनती असंभव (नामुमकिन) हो।

مُّتَّكِـِٔينَ عَلَيۡهَا مُتَقَٰبِلِينَ ﴿16﴾

१६. एक-दूसरे के सामने तकिया लगाये बैठे होंगे ।[1]

يَطُوفُ عَلَيۡهِمۡ وِلۡدَٰنٞ مُّخَلَّدُونَ ﴿17﴾

१७. उन के क़रीब ऐसे लड़के जो हमेशा (लड़के ही) रहेंगे, आया-जाया करेंगे ।

بِأَكۡوَابٖ وَأَبَارِيقَ وَكَأۡسٖ مِّن مَّعِينٖ ﴿18﴾

१८. प्याले और सुराही लेकर और मदिरा का प्याला लेकर जो छलकते मदिरा से भरा हो ।

لَّا يُصَدَّعُونَ عَنۡهَا وَلَا يُنزِفُونَ ﴿19﴾

१९. जिस से न सिर में चक्कर हो और न अक़्ल ख़राब हो ।[2]

وَفَٰكِهَةٖ مِّمَّا يَتَخَيَّرُونَ ﴿20﴾

२०. और ऐसे मेवे लिए हुए जिसे वे पसन्द करें।

وَلَحۡمِ طَيۡرٖ مِّمَّا يَشۡتَهُونَ ﴿21﴾

२१. और पक्षियों के गोश्त जो उन्हें (बहुत) मज़ेदार हों ।

وَحُورٌ عِينٞ ﴿22﴾

२२. और बड़ी-बड़ी आँखों वाली हूरें ।

كَأَمۡثَٰلِ ٱللُّؤۡلُوِٕ ٱلۡمَكۡنُونِ ﴿23﴾

२३. जो छिपे हुए मोतियों की तरह हैं ।

جَزَآءَۢ بِمَا كَانُواْ يَعۡمَلُونَ ﴿24﴾

२४. यह बदला है उन के कर्मों (अमल) का ।

لَا يَسۡمَعُونَ فِيهَا لَغۡوٗا وَلَا تَأۡثِيمًا ﴿25﴾

२५. न (वे) वहाँ बेकार की बात सुनेंगे और न पाप की बात ।

إِلَّا قِيلٗا سَلَٰمٗا سَلَٰمٗا ﴿26﴾

२६. केवल सलाम ही सलाम (शान्ति ही शान्ति) की आवाज़ होगी ।[3]

---

[1] مَوضُونَة बुने और जड़े हुए, यानी उक्त (मज़कूरा) जन्नती सोने के तारों से बुने और जवाहरों से जड़े हुए तख़्तों पर एक-दूसरे के सामने तकियों पर बैठे होंगे ।

[2] صُدَاع (सुदाअ) सिर के ऐसे दर्द को कहते हैं जो शराब के नशे के सबब हो । إِنزَاف (इनज़ाफ़) का मतलब वह अक़्ल का बिगाड़ है जो नशे की वजह से हो । दुनिया की शराब से यह दोनों बातें होती हैं । परलोक (आख़िरत) की शराब में ख़ुशी और मज़ा तो ज़रूर होगा लेकिन यह ख़राबियाँ नहीं होंगी । مَعِين (मईन) बहते स्रोत (चश्मा) जो सूखता न हो ।

[3] यानी दुनिया में तो आपस में लड़ाई-झगड़े होते हैं, यहाँ तक कि बहन-भाई भी इससे सुरक्षित (महफ़ूज़) नहीं । इस मतभेद (इख़्तिलाफ़) और झगड़े से दिलों में मैल और दुश्मनी पैदा होती है, जो एक-दूसरे के ख़िलाफ़ बुरे शब्द, गाली-गलोज और चुगली वग़ैरह पर इंसान को उकसाती

وَأَصْحَٰبُ ٱلْيَمِينِ مَآ أَصْحَٰبُ ٱلْيَمِينِ ﴿27﴾

२७. और दाहिने हाथ वाले क्या ही अच्छे हैं, दाहिने हाथ वाले।

فِى سِدْرٍ مَّخْضُودٍ ﴿28﴾

२८. वे बिना काँटों के बैर,

وَطَلْحٍ مَّنضُودٍ ﴿29﴾

२९. और तह पर तह क़िलों,

وَظِلٍّ مَّمْدُودٍ ﴿30﴾

३०. और लम्बी-लम्बी छाओं,

وَمَآءٍ مَّسْكُوبٍ ﴿31﴾

३१. और बहता पानी,

وَفَٰكِهَةٍ كَثِيرَةٍ ﴿32﴾

३२. और बहुत ज़्यादा फलों में,

لَّا مَقْطُوعَةٍ وَلَا مَمْنُوعَةٍ ﴿33﴾

३३. जो न ख़त्म हों, न रोक लिये जायें,

وَفُرُشٍ مَّرْفُوعَةٍ ﴿34﴾

३४. और ऊँचे-ऊँचे फ़र्शों पर होंगे।

إِنَّآ أَنشَأْنَٰهُنَّ إِنشَآءً ﴿35﴾

३५. हम ने उन (की पत्नियों) को ख़ास तौर से बनाया है।

فَجَعَلْنَٰهُنَّ أَبْكَارًا ﴿36﴾

३६. और हम ने उन्हें कुंवारियाँ बना दिया है।

عُرُبًا أَتْرَابًا ﴿37﴾

३७. प्रेम करने वालियाँ बराबर उम्र की हैं।[1]

है। जन्नत इन तमाम नैतिक (अख़लाक़ी) गंदगियों और बुराई से न केवल पाक होगी बल्कि वहाँ सलाम ही सलाम की अवाज़ें सुनने में आयेगी, फ़रिश्तों की तरफ़ से भी और एक-दूसरे जन्नतियों की तरफ़ से भी, जिसका मतलब यह है कि वहाँ सलाम और एहतेराम तो होगा लेकिन मन और क़ौल की वह ख़राबियाँ नहीं होंगी, जो दुनिया में आम हैं यहाँ तक कि बड़े-बड़े मज़हबी पेशवा भी इन से महफ़ूज़ नहीं।

[1] عُرُبٌ यह عَرُوبَةٌ का बहुवचन (जमा) है, यानी ऐसी नारी जो अपनी ख़ूबसूरती, ज़ीनत और दूसरे गुणों (सिफ़त) की वजह से अपने पति की बहुत प्रिय हो। أَتْرَابٌ यह تِرْبٌ का बहुवचन है हम उम्र यानी जन्नतियों की पत्नियाँ सभी एक उम्र की होंगी, जैसा कि हदीस में बयान किया गया है कि सब जन्नती ३३ साल की उम्र के होंगे। (तिर्मिज़ी, बाबु माजाअ फ़ी सिन्ने अहलिल जन्नते) यह भी मतलब हो सकता है कि अपने पतियों के उम्र के बराबर होंगी, दोनों का मतलब एक ही है।

لِّأَصْحَٰبِ ٱلْيَمِينِ ﴿38﴾

३८. दाहिने हाथ वालों के लिए हैं।

ثُلَّةٌ مِّنَ ٱلْأَوَّلِينَ ﴿39﴾

३९. (बहुत) बड़ा गिरोह है पहले लोगों में से।

وَثُلَّةٌ مِّنَ ٱلْـَٔاخِرِينَ ﴿40﴾

४०. और (बहुत) बड़ा गिरोह है पिछलों में से।

وَأَصْحَٰبُ ٱلشِّمَالِ مَآ أَصْحَٰبُ ٱلشِّمَالِ ﴿41﴾

४१. और बायें हाथ वाले क्या हैं; बायें हाथ वाले।[1]

فِى سَمُومٍ وَحَمِيمٍ ﴿42﴾

४२. गरम हवा और गरम पानी में (होंगे)।

وَظِلٍّ مِّن يَحْمُومٍ ﴿43﴾

४३. और काले धुयें की छाया में।

لَّا بَارِدٍ وَلَا كَرِيمٍ ﴿44﴾

४४. जो न ठंडी है, न सुखद।

إِنَّهُمْ كَانُوا۟ قَبْلَ ذَٰلِكَ مُتْرَفِينَ ﴿45﴾

४५. बेशक ये लोग इससे पहले बहुत खुशहाली में पले हुए थे।

وَكَانُوا۟ يُصِرُّونَ عَلَى ٱلْحِنثِ ٱلْعَظِيمِ ﴿46﴾

४६. और महापापों पर इसरार करते थे।

وَكَانُوا۟ يَقُولُونَ أَئِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَٰمًا أَءِنَّا لَمَبْعُوثُونَ ﴿47﴾

४७. और कहते थे कि क्या जब हम मर जायेंगे और मिट्टी और हड्डी हो जायेंगे, तो क्या हम दोबारा जिन्दा करके खड़े किये जायेंगे।

أَوَءَابَآؤُنَا ٱلْأَوَّلُونَ ﴿48﴾

४८. और क्या हमारे बाप-दादा भी?[2]

قُلْ إِنَّ ٱلْأَوَّلِينَ وَٱلْـَٔاخِرِينَ ﴿49﴾

४९. (आप) कह दीजिए कि बेशक सब अगले और पिछले।

---

[1] इस से अभिप्राय (मुराद) नरकवासी हैं, जिनको उन के कर्मपत्र (आमालनामा) बायें हाथ में पकड़ाये जायेंगे, जो उन की बदकिस्मती की अलामत होगी।

[2] इस से मालूम हुआ कि परलोक (आख़िरत) के ईमान का इंकार ही कुफ़्र, शिर्क और पापों में लीन रहने की असल वजह है। यही बात है कि जब आख़िरत का तसव्वुर (कल्पना) उस के मानने वालों के विचार में धुंधला जाता है तो उन में दुराचार और बुराई बहुत हो जाती है, जैसे आजकल आम तौर से मुसलमानों की हालत है।

لَمَجۡمُوۡعُوۡنَ ۙ اِلٰی مِیۡقَاتِ یَوۡمٍ مَّعۡلُوۡمٍ ﴿50﴾

५०. जरूर जमा किये जायेंगे एक निर्धारित (मुकर्रर) दिन के समय।

ثُمَّ اِنَّکُمۡ اَیُّہَا الضَّآلُّوۡنَ الۡمُکَذِّبُوۡنَ ﴿51﴾

५१. फिर तुम हे भटके लोगो, झुठलाने वालो!

لَاٰکِلُوۡنَ مِنۡ شَجَرٍ مِّنۡ زَقُّوۡمٍ ﴿52﴾

५२. जरूर खाने वाले हो जक़्कूम (थूहड़) का पेड़।

فَمَالِـُٔوۡنَ مِنۡہَا الۡبُطُوۡنَ ﴿53﴾

५३. और उसी से पेट भरने वाले हो।

فَشٰرِبُوۡنَ عَلَیۡہِ مِنَ الۡحَمِیۡمِ ﴿54﴾

५४. फिर उस पर गर्म उबलता हुआ पानी पीने वाले हो।

فَشٰرِبُوۡنَ شُرۡبَ الۡہِیۡمِ ﴿55﴾

५५. फिर पीने वाले भी प्यासे ऊँटों की तरह।[1]

ہٰذَا نُزُلُہُمۡ یَوۡمَ الدِّیۡنِ ﴿56﴾

५६. क़यामत के दिन उनकी मेहमानी यही है।[2]

نَحۡنُ خَلَقۡنٰکُمۡ فَلَوۡ لَا تُصَدِّقُوۡنَ ﴿57﴾

५७. हम ने ही तुम सब को पैदा किया है, फिर तुम क्यों नहीं मनाते?

اَفَرَءَیۡتُمۡ مَّا تُمۡنُوۡنَ ﴿58﴾

५८. अच्छा फिर यह तो बताओ कि जो वीर्य (मनी) तुम टपकाते हो।

ءَاَنۡتُمۡ تَخۡلُقُوۡنَہٗۤ اَمۡ نَحۡنُ الۡخٰلِقُوۡنَ ﴿59﴾

५९. क्या उस से (इंसान) तुम बनाते हो या स्रष्टा (ख़ालिक) हम ही हैं?[3]

---

[1] هِيمٌ (हीम) أَهْيَم का बहुवचन (जमा) है, उन प्यासे ऊँटों को कहा जाता है जो एक ख़ास बीमारी की वजह से पानी पर पानी पीते जाते हैं लेकिन उनकी प्यास नहीं जाती। मतलब यह है कि जक़्कूम खाकर पानी भी वैसे ही नहीं पियोगे जो साधारण (आम) ढंग से होता है, बल्कि एक तो सज़ा के रूप में तुम्हें पीने के लिए खौलता पानी मिलेगा, दूसरे तुम उसे प्यासे ऊँट की तरह पीते ही चले जाओगे लेकिन तुम्हारी प्यास दूर नहीं होगी।

[2] यह मज़ाक़ के तौर पर फ़रमाया : नहीं तो मेहमानी तो वह होती है जो मेहमान के एहतेराम के लिये किया जाता है। जैसे कुछ जगहों पर फ़रमाया :

﴿فَبَشِّرْهُم بِعَذَابٍ أَلِيمٍ﴾

"उन को दुखदायी अज़ाब की ख़ुशख़बरी सुना दो।" (आले इमरान-२१)

[3] यानी तुम्हारी पत्नियों से संभोग (जिमाअ) के नतीजे में तुम्हारे वीर्य (मनी) की जो बूँदे स्त्रियों के गर्भाशय (रिहम) में जाती हैं, उन से इंसानी रूप रेखा बनाने वाले हम हैं या तुम?

نَحْنُ قَدَّرْنَا بَيْنَكُمُ الْمَوْتَ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوقِينَ ﴿60﴾

६०. हम ही ने तुम में मौत को मुक़द्दर कर दिया है और हम उस से हारे हुए नहीं हैं।

عَلَىٰ أَن نُّبَدِّلَ أَمْثَالَكُمْ وَنُنشِئَكُمْ فِي مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿61﴾

६१. कि तुम्हारी जगह पर तुम जैसे दूसरे पैदा कर दें और तुम्हें नये रूप से (उस दुनिया में) पैदा करें जिस से तुम (हमेशा) अन्जान हो।

وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ النَّشْأَةَ الْأُولَىٰ فَلَوْلَا تَذَكَّرُونَ ﴿62﴾

६२. और तुम्हें निश्चित रूप (यक़ीनी तौर) से पहले जन्म का ज्ञान (इल्म) भी है, फिर नसीहत क्यों नहीं हासिल करते?

أَفَرَأَيْتُم مَّا تَحْرُثُونَ ﴿63﴾

६३. अच्छा फिर यह भी बताओ कि तुम जो कुछ बोते हो।

أَأَنتُمْ تَزْرَعُونَهُ أَمْ نَحْنُ الزَّارِعُونَ ﴿64﴾

६४. उसे तुम ही उगाते हो या हम उगाने वाले हैं।[1]

لَوْ نَشَاءُ لَجَعَلْنَاهُ حُطَامًا فَظَلْتُمْ تَفَكَّهُونَ ﴿65﴾

६५. अगर हम चाहें तो उसे कण-कण कर दें और तुम ताज्जुब के साथ बातें बनाते ही रह जाओ।

إِنَّا لَمُغْرَمُونَ ﴿66﴾

६६. कि हम पर तो दण्ड (सज़ा) ही पड़ गया।

بَلْ نَحْنُ مَحْرُومُونَ ﴿67﴾

६७. बल्कि हम तो पूरी तरह से वंचित (महरूम) ही रह गये।

أَفَرَأَيْتُمُ الْمَاءَ الَّذِي تَشْرَبُونَ ﴿68﴾

६८. अच्छा यह बताओ कि जिस पानी को तुम पीते हो।

أَأَنتُمْ أَنزَلْتُمُوهُ مِنَ الْمُزْنِ أَمْ نَحْنُ الْمُنزِلُونَ ﴿69﴾

६९. उसे बादलों से भी तुम ही ने उतारा है या हम बारिश करते हैं।

لَوْ نَشَاءُ جَعَلْنَاهُ أُجَاجًا فَلَوْلَا تَشْكُرُونَ ﴿70﴾

७०. अगर हमारी इच्छा हो तो हम उसे कड़ुवा (ज़हर) कर दें फिर तुम हमारा शुक्रिया क्यों नहीं अदा करते?[2]

---

[1] यानी ज़मीन में तुम जो बीज बोते हो वह एक पौधा बनकर उगता है। अन्न के एक बेजान दाने को फाड़कर और धरती की छाती को चीरकर इस तरह पेड़ उपजाने वाला कौन है? यह भी वीर्य (मनी) की बूँद से इंसान बना देने की तरह हमारे ही सामर्थ्य (क़ुदरत) की कलाकारी है या तुम्हारी किसी कोशिश या छू मंतर का नतीजा है?

[2] यानी इस अनुग्रह (नेमत) पर हमारे हुक्म का पालन (पैरवी) करके हमारा व्यवहारिक (अमली) शुक्रिया क्यों अदा नहीं करते?

أَفَرَءَيْتُمُ النَّارَ الَّتِي تُورُونَ ﴿71﴾

७१. अच्छा यह भी बताओ कि जो आग तुम सुलगाते हो।

ءَأَنتُمْ أَنشَأْتُمْ شَجَرَتَهَا أَمْ نَحْنُ الْمُنشِـُٔونَ ﴿72﴾

७२. उस के पेड़ को तुम ने पैदा किया है या हम उस के पैदा करने वाले हैं ?

نَحْنُ جَعَلْنَاهَا تَذْكِرَةً وَمَتَاعًا لِّلْمُقْوِينَ ﴿73﴾

७३. हम ने उसे नसीहत हासिल करने का साधन (ज़रिया) और यात्रियों के फ़ायेदा की चीज़ बनाई है।

فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ﴿74﴾

७४. तो अपने महान (अज़ीम) रब के नाम की तस्बीह बयान किया करो।

فَلَا أُقْسِمُ بِمَوَاقِعِ النُّجُومِ ﴿75﴾

७५. तो मैं क़सम खाता हूँ सितारों के गिरने की।[1]

وَإِنَّهُ لَقَسَمٌ لَّوْ تَعْلَمُونَ عَظِيمٌ ﴿76﴾

७६. और अगर तुम्हें इल्म हो तो यह बहुत बड़ी क़सम है।

إِنَّهُ لَقُرْآنٌ كَرِيمٌ ﴿77﴾

७७. कि बेशक यह क़ुरआन बड़ी इज़्ज़त वाला है।

فِي كِتَابٍ مَّكْنُونٍ ﴿78﴾

७८. जो एक महफ़ूज़ किताब में (लिखित) है।

لَّا يَمَسُّهُ إِلَّا الْمُطَهَّرُونَ ﴿79﴾

७९. जिसे केवल पाक लोग ही छू सकते हैं।[2]

تَنزِيلٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ﴿80﴾

८०. यह सारी दुनिया के रब की तरफ़ से नाज़िल किया गया है।

أَفَبِهَٰذَا الْحَدِيثِ أَنتُم مُّدْهِنُونَ ﴿81﴾

८१. तो क्या तुम ऐसी बात को साधारण (और हक़ीर) समझ रहे हो?

---

[1] فلا أقسم में 'ला' ज़्यादा है, जो बल देने के लिये है या यह ज़्यादा नहीं है बल्कि पहले की किसी चीज़ को नकारने के लिए है, यानी यह क़ुरआन ज्योतिष (कहानत) या शायरी नहीं, बल्कि मैं तारों के गिरने की क़सम लेकर कहता हूँ कि यह क़ुरआन इज़्ज़त वाला है। مواقع النجوم से मुराद तारों के निकलने और डूबने की जगह और मदार (धुव्र) हैं।

[2] لا يمسه में सर्वनाम (ज़मीर) लौहे महफ़ूज़ की तरफ़ फिरता है, पाक लोगों से मुराद फ़रिश्ते हैं। कुछ ने उसको क़ुरआन की तरफ़ फिराया है यानी उसे फ़रिश्ते ही छूते हैं, यानी आकाश पर फ़रिश्तों के सिवा किसी की भी पहुँच क़ुरआन तक नहीं होती। मतलब मुश्रेकीन का खंडन (तरदीद) है जो कहते थे कि क़ुरआन शैतान लेकर उतरते हैं, अल्लाह ने फ़रमाया यह कैसे मुमकिन है, यह क़ुरआन शैतानी असर से हमेशा महफ़ूज़ है।

وَتَجْعَلُوْنَ رِزْقَكُمْ اَنَّكُمْ تُكَذِّبُوْنَ (82)

८२. और अपने हिस्से में यही लेते हो कि झुठलाते फिरो।

فَلَوْلَآ اِذَا بَلَغَتِ الْحُلْقُوْمَ (83)

८३. तो जब कि (जान) गले तक पहुँच जाये।

وَاَنْتُمْ حِيْنَئِذٍ تَنْظُرُوْنَ (84)

८४. और तुम उस समय (आँखों से) देखते रहो।

وَنَحْنُ اَقْرَبُ اِلَيْهِ مِنْكُمْ وَلٰكِنْ لَّا تُبْصِرُوْنَ (85)

८५. और हम उस इंसान से तुम्हारे मुक़ावले में ज़्यादा क़रीब होते हैं,[1] लेकिन तुम नहीं देख सकते।

فَلَوْلَآ اِنْ كُنْتُمْ غَيْرَ مَدِيْنِيْنَ (86)

८६. तो अगर तुम किसी की आज्ञा (इताअत) के अधीन (मातहत) नहीं।

تَرْجِعُوْنَهَآ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ (87)

८७. और उस क़ौल में सच्चे हो तो तनिक उस प्राण (रूह) को तो लौटाओ।

فَاَمَّآ اِنْ كَانَ مِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ (88)

८८. तो जो कोई भी (अल्लाह के दरबार में) क़रीब होगा।[2]

فَرَوْحٌ وَّرَيْحَانٌ ڏ وَّجَنَّتُ نَعِيْمٍ (89)

८९. उसे तो सुख है और ख़ाना है और सुखदायी जन्नत है।

وَاَمَّآ اِنْ كَانَ مِنْ اَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ (90)

९०. और जो इंसान दाहिने हाथ वालों में से है।[3]

---

[1] यानी मरने वाले के हम तुम से भी ज़्यादा क़रीब होते हैं, अपने इल्म, क़ुदरत और दर्शन (बसीरत) की बुनियाद पर, या हम से मुराद अल्लाह के कार्यकर्त्ता (कारकुन) यानी मौत के फ़रिश्ते हैं जो उसका प्राण (रूह) निकालते हैं।

[2] सूर: के शुरू में कर्मों (अमल) के अनुसार इंसानों के जो तीन भेद (क़िस्म) बयान किये गये थे, उनका दोवारा बयान किया जा रहा है, यह उनकी पहली क़िस्म है जिन्हें मुक़र्रबीन के सिवा साबिक़ीन (अग्रणि) भी कहा जाता है, क्योंकि वह नेकी के हर काम में आगे होते हैं, ईमान लाने में भी दूसरों से आगे होते हैं और अपने इन्हीं गुणों (सिफ़्तों) की वजह से वह अल्लाह के दरबार के समीपवर्तियों (मुक़र्रबीन) में होते हैं।

[3] यह दूसरा दर्जा है, साधारण (आम) ईमानवाले। यह भी नरक से बचकर जन्नत में जायेंगे लेकिन पदों (ओहदों) में साबिक़ीन (पहले के लोगों) से कमतर होंगे। मौत के समय उनको भी फ़रिश्ते शान्ति (सलामती) की ख़ुशख़बरी देते हैं।

९१. तो भी सलाम है तेरे लिए कि तू दाहिने वालों में से है।

९२. लेकिन अगर कोई झुठलाने वाले पथभ्रष्टों (गुमराहों) में से है।[1]

९३. तो खौलते हुए पानी से मेहमानी है।

९४. और नरक में जाना है।

९५. यह (ख़बर) सरासर हक़ और बिल्कुल निश्चित (यक़ीनी) है।

९६. तो तू अपने (बड़े अज़ीम) रब के नाम की पवित्रता (पाकीज़गी) बयान कर।[2]

सूरतुल हदीद-५७

सूर: हदीद मदीने में नाज़िल हुई और इस में उन्तीस आयतें और चार रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

१. आकाशों और धरती में जो कुछ है (सभी) अल्लाह की तस्बीह (महिमागान) कर रहे हैं, और वह शक्तिशाली (ग़ालिब) हिक्मत वाला है।

२. आकाशों और धरती का राज्य (मुल्क) उसी का है, वही ज़िंदगी देता है और मौत भी, और वह सभी चीज़ पर क़ादिर है।

فَسَلٰمٌ لَّكَ مِنْ اَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ﴿91﴾

وَاَمَّآ اِنْ كَانَ مِنَ الْمُكَذِّبِيْنَ الضَّآلِّيْنَ ﴿92﴾

فَنُزُلٌ مِّنْ حَمِيْمٍ ﴿93﴾

وَّتَصْلِيَةُ جَحِيْمٍ ﴿94﴾

اِنَّ هٰذَا لَهُوَ حَقُّ الْيَقِيْنِ ﴿95﴾

فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ﴿96﴾

سُوْرَةُ الْحَدِيْدِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿1﴾

لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿2﴾

[1] यह तीसरा दर्जा है जिन्हें सूरह के शुरू में أَصْحَابُ الْمَشْئَمَةِ "असहाबुल मश्अमः" कहा गया था, बायें हाथ वाले या अशुभ (नहूसत) वाले। यह अपने कुफ्र और पाखंड (सरकशी) की सज़ा या उसका अशुभ, नरक की यातना (अज़ाब) के रूप में भुगतेंगे।

[2] हदीस में आता है कि दो शब्द (कलिमा) अल्लाह को बहुत प्यारे हैं, बोलने में हल्के और तौल में भारी हैं। «سبحان الله و بحمده سبحان الله العظيم» (सहीह बुख़ारी, आख़िरी हदीस और सहीह मुस्लिम, किताबुज़ ज़िक्र, बाबु फ़ज़लित तहलील वत्तस्बीह वदुआ)

३. वही पहला है और वही आख़िरी, वही खुला है और वही छिपा,[1] और वह हर चीज़ को अच्छी तरह जानने वाला है।

هُوَ الْأَوَّلُ وَالْآخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ ۖ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ③

४. वही है जिसने आकाशों और धरती को छ: दिन में पैदा किया, फिर अर्श पर बलंद हुआ, वह (अच्छी तरह) जानता है उस चीज़ को जो धरती में जाये और जो उस से निकले, और जो आकाश से नीचे आये और जो कुछ चढ़कर उस में जाये और जहाँ कहीं तुम हो वह तुम्हारे साथ है[2] और जो कुछ तुम कर रहे हो अल्लाह देख रहा है।

هُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ ۚ يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِي الْأَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيهَا ۖ وَهُوَ مَعَكُمْ أَيْنَ مَا كُنْتُمْ ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ④

५. आकाशों और धरती का राज्य उसी का है, और सभी काम उसी की ओर लौटाये जाते हैं।

لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ⑤

६. वही रात को दिन में दाख़िल कराता है और वही दिन को रात में दाख़िल कराता है,और सीनों में छिपी हुई बातों का वह पूरा इल्म (ज्ञान) रखने वाला है।

يُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُولِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ ۚ وَهُوَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ⑥

७. अल्लाह पर और उस के रसूल (सन्देष्टा) पर ईमान ले आओ और उस माल में से ख़र्च करो जिस में अल्लाह ने तुम्हें (दूसरों का) वारिस बनाया है,[3] तो तुम में से जो ईमान लायें और ख़र्च करें उन्हें बहुत बड़ा पुण्य (अज्र) मिलेगा।

آمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَأَنْفِقُوا مِمَّا جَعَلَكُمْ مُسْتَخْلَفِينَ فِيهِ ۖ فَالَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ وَأَنْفَقُوا لَهُمْ أَجْرٌ كَبِيرٌ ⑦

---

[1] वही पहला है यानी उस से पहले कुछ न था, वही आख़िरी है, जिस के बाद कोई चीज़ नहीं होगी। वही ज़ाहिर है यानी सब पर प्रभुत्वशाली (ग़ालिब) है, उस पर कोई प्रभुत्व (ग़ल्बा) नहीं रखता। वही बातिन है, यानी बातिन की सभी बातें केवल वही जानता है या लोगों की आँखों और बुद्धियों (अक़्लों) से छिपी है। (फ़तहुल क़दीर)

[2] यानी तुम जल में हो या थल में, रात हो या दिन, घरों में हो या जंगलों में, हर जगह पर हर समय वह अपने ज्ञान (इल्म) और क़ुदरत के आधार (बुनियाद) पर तुम्हारे साथ है, यानी तुम्हारे एक-एक कर्म (अमल) को देखता है, तुम्हारी एक-एक बात जानता और सुनता है। यही विषय सूर: हूद-३, सूर: रअ्द-१० और दूसरी आयतों में भी बयान किया गया है।

[3] यानी यह माल इस से पहले किसी दूसरे के पास था, इस में इस बात की तरफ़ इशारा है कि तुम्हारे पास भी यह धन नहीं रहेगा, दूसरे उस के वारिस बनेंगे, अगर तुम ने उसे अल्लाह के रास्ते में ख़र्च नहीं किया तो बाद में इस के वारिस उसे अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करके तुम से ज़्यादा सौभाग्य (सआदत) प्राप्त कर सकते हैं और अगर वह नाफ़रमानी में ख़र्च करेंगे तो तुम भी मदद करने के अपराध (जुर्म) में पकड़े जाओगे। (इब्ने कसीर)

८. तुम अल्लाह पर ईमान क्यों नहीं लाते? जबकि खुद रसूल तुम्हें अपने रब पर ईमान लाने की दावत दे रहा है और अगर तुम ईमानवाले हो तो वह तुम से मजबूत वादा भी ले चुका है।

وَمَا لَكُمْ لَا تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ ۚ وَالرَّسُولُ يَدْعُوكُمْ لِتُؤْمِنُوا بِرَبِّكُمْ وَقَدْ أَخَذَ مِيثَاقَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ⑧

९. वह (अल्लाह) ही है जो अपने बंदे पर स्पष्ट (वाजेह) आयतें नाज़िल करता है ताकि वह तुम्हें अंधेरे से उजाले की तरफ़ ले जाये। बेशक अल्लाह (तआला) तुम पर शफ़क़त, रहम करने वाला है।

هُوَ الَّذِي يُنَزِّلُ عَلَىٰ عَبْدِهِ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ لِيُخْرِجَكُمْ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ ۚ وَإِنَّ اللَّهَ بِكُمْ لَرَءُوفٌ رَحِيمٌ ⑨

१०. और तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह के रास्ते में ख़र्च नहीं करते? हक़ीक़त में आकाशों और धरती की (सभी) मीरास (चीज़ों) का मालिक (अकेला) अल्लाह ही है। तुम में से जिन लोगों ने फ़त्ह से पहले अल्लाह के रास्ते में दिया है और जिहाद किया है वह (दूसरों के) बराबर नहीं,[1] बल्कि उन से बहुत ऊँचे पद के हैं, जिन्होंने फ़त्ह के बाद दान किया और जिहाद किया। हाँ, भलाई का वादा तो अल्लाह तआला का उन सब से है,[2] और जो कुछ तुम (लोग) कर रहे हो उसे अल्लाह जानता है।

وَمَا لَكُمْ أَلَّا تُنْفِقُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلِلَّهِ مِيرَاثُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ لَا يَسْتَوِي مِنْكُمْ مَنْ أَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَقَاتَلَ ۚ أُولَٰئِكَ أَعْظَمُ دَرَجَةً مِنَ الَّذِينَ أَنْفَقُوا مِنْ بَعْدُ وَقَاتَلُوا ۚ وَكُلًّا وَعَدَ اللَّهُ الْحُسْنَىٰ ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ⑩

---

[1] फ़त्ह (विजय) से मुराद ज्यादातर मुफ़िस्सरों के क़रीब मक्का की विजय (फ़त्ह) है। कुछ ने हुदैबिया की सुलह को खुली विजय (फ़त्हे मोबीन) मानकर उसे ही मुराद लिया है, जो भी हो, हुदैबिया सुलह या मक्का की विजय से पहले मुसलमान तादाद और ताक़त में कम थे और मुसलमानों की माली हालत भी बहुत कमजोर थी। इन हालतों में अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करना और जिहाद में हिस्सा लेना बहुत कठिन और बड़े हिम्मत का काम था, जबकि मक्का विजय के बाद यह हालत बदल गई। मुसलमान ताक़त और तादाद में भी बढ़ते चले गये और उनकी आर्थिक दशा (माली हालत) भी पहले से कहीं अच्छी हो गई, इस में अल्लाह तआला ने दोनों ज़मानों के मुसलमानों के बारे में फ़रमाया कि यह नेकी में बराबर नहीं हो सकते।

[2] इस में साफ़ कर दिया कि सहाबा ﷺ के बीच प्रतिष्ठा (फ़ज़ीलत) और दर्जों में फ़र्क ज़रूर है, किन्तु दर्जों में फ़र्क का मतलब यह नहीं कि बाद के मुसलमान होने वाले सहाबा ﷺ ईमान और नैतिकता (अख़लाक़) में गये गुज़रे थे, जैसाकि कुछ लोग हज़रत मुआविया ﷺ और उन के पिता और दूसरे ऐसे ही अज़मत वाले सहाबा के बारे में बुरा कलाम या उन्हें 'तुलक़ा' कहकर उनकी तौहीन और अपमान (बेइज़्ज़त) करते हैं। नबी ﷺ ने सभी सहाबा के बारे में फ़रमाया : ((لا تسبوا أصحابي)) "मेरे सहाबा को अपशब्द (बुरा कलाम) न कहो, क़सम है उस शक्ति (ज़ात) की जिस के हाथ में मेरी जान है, अगर तुम में से कोई ओहुद पहाड़ जितना सोना भी अल्लाह की राह में ख़र्च कर दे तो वह मेरे सहाबा के एक मुद्द बल्कि आधे मुद्द (वज़न) के बराबर भी नहीं।" (सहीह बुख़ारी, मुस्लिम, किताबु फ़ज़ाएलिस् सहाबा)

مَنْ ذَا الَّذِىْ يُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضٰعِفَهٗ لَهٗ وَلَهٗٓ اَجْرٌ كَرِيْمٌ ﴿11﴾

११. कौन है? जो अल्लाह (तआला) को अच्छी तरह से क़र्ज़ दे, फिर अल्लाह (तआला) उस के लिए उस को बढ़ाता चला जाये और उसका अच्छा बदला साबित हो जाये।[1]

يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ يَسْعٰى نُوْرُهُمْ بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَبِاَيْمَانِهِمْ بُشْرٰىكُمُ الْيَوْمَ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿12﴾

१२. [क़यामत (प्रलय) के] दिन तू देखेगा कि ईमानवाले मर्दों और औरतों का प्रकाश (नूर) उन के आगे-आगे और उन के दायें दौड़ रहा होगा।[2] आज तुम्हें उन स्वर्गों की ख़ुशख़बरी है, जिन के नीचे (ठंडे पानी) की नहरें बह रही हैं, जिनमें हमेशा रहेंगे, यह है बड़ी कामयाबी।

يَوْمَ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالْمُنٰفِقٰتُ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوا انْظُرُوْنَا نَقْتَبِسْ مِنْ نُّوْرِكُمْ ۚ قِيْلَ ارْجِعُوْا وَرَاۗءَكُمْ فَالْتَمِسُوْا نُوْرًا ۭ فَضُرِبَ بَيْنَهُمْ بِسُوْرٍ لَّهٗ بَابٌ ۭ بَاطِنُهٗ فِيْهِ الرَّحْمَةُ وَظَاهِرُهٗ مِنْ قِبَلِهِ الْعَذَابُ ﴿13﴾

१३. उस दिन द्वयवादी (मुनाफ़िक़) पुरूष और महिलायें ईमानवालों से कहेंगे कि हमारा इंतेज़ार तो करो कि हम भी तुम्हारी रौशनी से कुछ रौशनी ले लें[3] जवाब दिया जायेगा कि तुम अपने पीछे लौट जाओ और रौशनी की खोज करो, फिर उन के और उन के बीच एक दीवार क़ायम कर दी जायेगी, जिस में दरवाज़ा भी होगा, उस के भीतरी भाग में कृपा (रहमत) होगी और बाहरी भाग में यातना (अज़ाब) होगी।

يُنَادُوْنَهُمْ اَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ ۭ قَالُوْا بَلٰى وَلٰكِنَّكُمْ فَتَنْتُمْ اَنْفُسَكُمْ وَتَرَبَّصْتُمْ وَارْتَبْتُمْ وَغَرَّتْكُمُ الْاَمَانِيُّ حَتّٰى جَاۗءَ اَمْرُ اللّٰهِ وَغَرَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ﴿14﴾

१४. ये चिल्ला-चिल्ला कर उन से कहेंगे कि क्या हम तुम्हारे साथ न थे? वे कहेंगे कि हाँ थे तो ज़रूर, लेकिन तुम ने अपने आप को भटकावे में डाल रखा था, और इंतेज़ार में ही रहे और शक व शुब्हा करते रहे और तुम्हें तुम्हारी (बेकार) आकांक्षाओं (आरज़ूओं) ने धोखे में ही रखा, यहाँ तक कि अल्लाह का हुक्म आ पहुँचा और तुम्हें अल्लाह के बारे में धोखा देने वाले ने धोखे में ही रखा।

---

[1] अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ देने का मतलब यह है कि अल्लाह के रास्ते में दान और नेकी करना।

[2] यह क़यामत में पुल सिरात पर होगा, यह प्रकाश (नूर) उन के ईमान और नेकी के कर्मों (अमल) का बदला होगा, जिस के प्रकाश में वह जन्नत का रास्ता आसानी से तय कर लेंगे।

[3] यह मुनाफ़िक़ कुछ दूर ईमानवालों के साथ उन के प्रकाश में चलेंगे, फिर अल्लाह तआला मुनाफ़िक़ों पर अंधेरा आच्छादित (मुसल्लत) कर देगा, उस समय वे ईमानवालों से यह कहेंगे।

१५. तो आज न तुम से फ़िदिया (और न बदला) क़ुबूल किया जायेगा और न काफ़िरों से, तुम सब का ठिकाना नरक है, वही तुम्हारा साथी है[1] और वह बुरा ठिकाना है।

فَالْيَوْمَ لَا يُؤْخَذُ مِنْكُمْ فِدْيَةٌ وَّلَا مِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۭ مَاْوٰىكُمُ النَّارُ ۭ هِيَ مَوْلٰىكُمْ ۭ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ⑮

१६. क्या अब तक ईमानवालों के लिए समय नहीं आया कि उन के दिल अल्लाह की याद से और जो हक़ नाज़िल हो चुका है, उस से कोमल हो जायें, और उन लोगों की तरह न हो जायें जिन्हें इनसे पहले किताब दी गयी थी, फिर जब उन पर एक लम्बी मुद्दत ख़त्म हो गई तो उन के दिल कठोर हो गये, और उन में ज़्यादातर फ़ासिक़ (अवज्ञाकारी) हैं।

اَلَمْ يَاْنِ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ وَمَا نَزَلَ مِنَ الْحَقِّ ۙ وَلَا يَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلُ فَطَالَ عَلَيْهِمُ الْاَمَدُ فَقَسَتْ قُلُوْبُهُمْ ۭ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ⑯

१७. यक़ीन करो कि अल्लाह ही धरती को उसकी मौत के बाद ज़िन्दा कर देता है, हम ने तो तुम्हारे लिए अपनी निशानियाँ बयान कर दी ताकि तुम समझो।

اِعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۭ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ⑰

१८. बेशक दान देने वाले पुरूष और महिलायें और जो अल्लाह को प्रेम (शुद्धता) के साथ क़र्ज़ दे रहे हैं, उनके लिए यह बढ़ाया जायेगा,[2] और उन के लिए अच्छा (प्रतिफल एवं) अज्र है।

اِنَّ الْمُصَّدِّقِيْنَ وَالْمُصَّدِّقٰتِ وَاَقْرَضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعَفُ لَهُمْ وَلَهُمْ اَجْرٌ كَرِيْمٌ ⑱

१९. अल्लाह और उसके रसूल (संदेष्टा) पर जो ईमान रखते हैं, वही लोग अपने रब के क़रीब सच्चे और शहीद हैं, उन के लिए उनका बदला और उन की दिव्य ज्योति (नूर) है, और जो कुफ़्र करते हैं और हमारी निशानियों को झुठलाते हैं वे नरकवासी (जहन्नमी) हैं।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖٓ اُولٰۗىِٕكَ هُمُ الصِّدِّيْقُوْنَ ڰ وَالشُّهَدَاۗءُ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۭ لَهُمْ اَجْرُهُمْ وَنُوْرُهُمْ ۭ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰۗىِٕكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ⑲

---

[1] مولى उसको कहते हैं जो किसी के काम का संरक्षक (निगराँ) यानी ज़िम्मेदार बने, मानो अब नरक ही इस बात की ज़िम्मेदार है कि उन्हें कड़ी से कड़ी यातना का मज़ा चखाये। कुछ कहते हैं कि सदा साथ रहने वाले को भी मौला कह लेते हैं, यानी अब नरक की आग ही हमेशा के लिए उनकी साथी तथा संगी होगी। कुछ कहते हैं कि अल्लाह नरक को भी अक़्ल और समझ देगा और वह काफ़िरों के ख़िलाफ़ ग़ुस्सा और ताव दिखायेगा, यानी उनका साथी बनेगा और उन्हें दुखदायी यातना (अज़ाब) से दोचार करेगा।

[2] यानी एक के बदले कम से कम दस गुना और उससे ज़्यादा सात सौ गुना, बल्कि उस से भी ज़्यादा। यह अधिकता (इज़ाफ़ा) मन की पाकी, ज़रूरत, जगह और वक़्त के ऐतबार से हो सकती है। जैसे पहले बयान हुआ कि जिन लोगों ने मक्का विजय (फ़त्ह) से पहले ख़र्च किया वह नेकी और अज्र में उन से ज़्यादा होंगे जिन्होंने उस के बाद ख़र्च किया।

اِعْلَمُوْٓا اَنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ وَّزِيْنَةٌ وَّتَفَاخُرٌۢ بَيْنَكُمْ وَتَكَاثُرٌ فِى الْاَمْوَالِ وَالْاَوْلَادِ ؕ كَمَثَلِ غَيْثٍ اَعْجَبَ الْكُفَّارَ نَبَاتُهٗ ثُمَّ يَهِيْجُ فَتَرٰىهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَكُوْنُ حُطَامًا ؕ وَفِى الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۙ وَّمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانٌ ؕ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ﴿20﴾

२०. याद रखो कि दुनियावी जीवन केवल खेल और तमाशा और जीनत और आपस में फख (और अहंकार) और माल और औलाद में एक-दूसरे से अपने आप को ज़्यादा बतलाना है, जैसे वर्षा और उसकी पैदावार किसानों[1] को अच्छी लगती है, फिर जब वह सूख जाती है तो पीले रंग में उस को तुम देखते हो, फिर वह बिल्कुल चूरा-चूरा हो जाती है,[2] और आख़िरत (परलोक) में सख़्त अज़ाब और अल्लाह की माफ़ी और खुशी है, और दुनियावी ज़िन्दगी केवल धोखे के सामान के सिवाय कुछ भी तो नहीं।

سَابِقُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا كَعَرْضِ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ۙ اُعِدَّتْ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ ؕ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿21﴾

२१. (आओ) दौड़ो अपने रब की माफ़ी की तरफ़ और उस जन्नत की तरफ़ जिसकी चौड़ाई आकाश और धरती की चौड़ाई के बराबर है। यह उन के लिए बनायी गयी है जो अल्लाह पर और उस के रसूलों (सन्देष्टाओं) पर ईमान रखते हैं, यह अल्लाह की कृपा (रहमत) है जिसे चाहे अता करे, और अल्लाह बड़ा फ़ज़्ल वाला है।

مَآ اَصَابَ مِنْ مُّصِيْبَةٍ فِى الْاَرْضِ وَلَا فِىْٓ اَنْفُسِكُمْ اِلَّا فِىْ كِتٰبٍ مِّنْ قَبْلِ اَنْ نَّبْرَاَهَا ؕ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ۚ ﴿22﴾

२२. न कोई कठिनाई (संकट) दुनिया में आती है[3] न विशेष तुम्हारी जानों पर,[4] लेकिन इस से पहले कि हम उस को पैदा करें वह एक ख़ास किताब में लिखी हुई है।[5] बेशक यह काम

---

[1] 'कुफ़्फ़ार' किसानों को कहा गया है, इसलिए कि इसका शाब्दिक अर्थ (लफ़्ज़ी मायने) है छिपाने वाला। काफ़िरों के दिलों में अल्लाह और आख़िरत का इंकार छिपा होता है, इस वजह से उसे काफ़िर कहा जाता है, किसानों के लिए यह शब्द इस वजह से प्रयोग (इस्तेमाल) किया गया है कि वह भी धरती में बीज बोते यानी उन्हें छिपा देते हैं।

[2] यहाँ दुनियावी जीवन के जल्द ख़त्म हो जाने को खेती से मिसाल दी गई है कि जिस तरह खेती हरी होती है तो भली लगती है जिसे देखकर किसान बहुत ख़ुश होते हैं, लेकिन वह जल्द ही सूखी और पीली होकर चूर-चूर हो जाती है। इसी तरह दुनिया की शोभा (ज़ीनत) और सुन्दरता (ख़ूबसूरती), धन, औलाद और दूसरी चीज़ें इंसान का मन लुभाती हैं, लेकिन यह जीवन कुछ दिन ही का है, इसे भी स्थायित्व (हमेशगी) और क़रार नहीं।

[3] जैसे सूखा, बाढ़ और दूसरी धरती और आकाश की मुसीबतें।

[4] जैसे रोग, थकान, ग़रीबी वग़ैरह।

[5] यानी अल्लाह ने अपने इल्म के मुताबिक़ पूरी मख़लूक़ को पैदा करने से पहले ही यह सब बातें लिख दी, जैसे हदीस में है, नबी ﷺ ने फ़रमाया : "अल्लाह ने आकाश और धरती के पैदा करने से पचास

अल्लाह (तआला) पर (बड़ा) आसान है।

لِّكَيْلَا تَأْسَوْا عَلَىٰ مَا فَاتَكُمْ وَلَا تَفْرَحُوا بِمَا آتَاكُمْ ۗ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُورٍ (23)

२३. ताकि तुम अपने से छिन जाने वाली चीज़ पर दुखी न हो जाया करो और न अता (प्रदान) की हुई चीज़ पर गर्व करने लगो[1] और इतराने वाले फ़ख़्र करने वालों से अल्लाह प्रेम नहीं करता।

الَّذِينَ يَبْخَلُونَ وَيَأْمُرُونَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ ۗ وَمَن يَتَوَلَّ فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ (24)

२४. जो (ख़ुद भी) कंजूसी करें और दूसरों को (भी) कंजूसी की शिक्षा (तालीम) दें। (सुनो!) जो भी मुँह फेरे, अल्लाह बेनियाज़ और प्रशंसा (तारीफ़) के लायक़ है।

لَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلَنَا بِالْبَيِّنَاتِ وَأَنزَلْنَا مَعَهُمُ الْكِتَابَ وَالْمِيزَانَ لِيَقُومَ النَّاسُ بِالْقِسْطِ ۖ وَأَنزَلْنَا الْحَدِيدَ فِيهِ بَأْسٌ شَدِيدٌ وَمَنَافِعُ لِلنَّاسِ وَلِيَعْلَمَ اللَّهُ مَن يَنصُرُهُ وَرُسُلَهُ بِالْغَيْبِ ۚ إِنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ عَزِيزٌ (25)

२५. बेशक हम ने अपने संदेष्टाओं (रसूलों) को खुली निशानियाँ दे कर भेजा और उन के साथ किताब और न्याय (तराज़ू) नाज़िल किया[2] ताकि लोग इंसाफ़ पर बाक़ी रहें, और हम ने लोहे को भी नाज़िल किया[3] जिस में बड़ी (हैबत और) ताक़त है और लोगों के लिए दूसरे भी बहुत से फ़ायदे हैं,[4] और इसलिए भी कि अल्लाह जान ले

हज़ार साल पहले ही सभी तक़दीर लिख दिया था।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल क़द्र)

[1] यहाँ जिस ग़म और ख़ुशी से रोका गया है, यह वह ग़म और ख़ुशी है जो इंसानों को नाजायेज़ कामों तक पहुँचाती है, नहीं तो दुख पर ग़म और सुख पर ख़ुशी एक फ़ितरी बात है, लेकिन मोमिन दुख पर सब्र करता है कि अल्लाह की मर्ज़ी और तक़दीर का लिखा है, रोने-चिल्लाने से बदल नहीं सकता और सुख पर इतराता नहीं। अल्लाह का कृतज्ञ (शुक्रगुज़ार) होता है कि यह सिर्फ़ उस की कोशिश का फल नहीं बल्कि अल्लाह की दया और उसका एहसान है।

[2] ميزان मीज़ान (तुला) से मुराद इंसाफ़ है और मतलब यह है कि हम ने लोगों को इंसाफ़ करने का हुक्म दिया है, कुछ ने इसका अनुवाद (तर्जुमा) तराज़ू किया है, तराज़ू उतारने से अभिप्राय (मुराद) है कि हम ने तराज़ू की ओर लोगों को रास्ता दिखाया कि उस के द्वारा (ज़रिये) लोगों को तौलकर उनका पूरा-पूरा हक़ दो।

[3] यहाँ भी उतारा का मायने है पैदा करना और उसकी कला सिखाना। लोहे से अनगिनत चीज़ें बनती हैं, यह सब अल्लाह के उस निर्देश (इल्हाम) और इरशाद का नतीजा है जो उस ने इंसान को किया है।

[4] अस्त्र-शस्त्र (हथियार) के अलावा लोहे से और भी बहुत से सामान बनते हैं जो घरों और बहुत से उद्योगों में काम आते हैं, जैसे छुरी, चाक़ू, कैंची, हथौड़ा, सुई, खेती, बढ़ई और निर्माण (तामीर) आदि के सामान और छोटी बड़ी अनगिनत मशीनें और सामान।

कि उसकी और रसूलों की मदद बिना देखे कौन करता है। बेशक अल्लाह (तआला) शक्तिशाली और सामर्थ्यवान (ग़ालिब) है।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا وَإِبْرَاهِيمَ وَجَعَلْنَا فِي ذُرِّيَّتِهِمَا النُّبُوَّةَ وَالْكِتَابَ ۖ فَمِنْهُم مُّهْتَدٍ ۖ وَكَثِيرٌ مِّنْهُمْ فَاسِقُونَ (26)

२६. बेशक हमने नूह और इब्राहीम (عليهما السلام) को (सन्देष्टा बनाकर) भेजा और हम ने उन दोनों की औलाद में पैग़म्बरी (दूतत्व) और किताब जारी रखी, तो उन में से कुछ रास्ते पर आये और उन में से बहुत ज़्यादा नाफ़रमान रहे।

ثُمَّ قَفَّيْنَا عَلَىٰ آثَارِهِم بِرُسُلِنَا وَقَفَّيْنَا بِعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ وَآتَيْنَاهُ الْإِنجِيلَ وَجَعَلْنَا فِي قُلُوبِ الَّذِينَ اتَّبَعُوهُ رَأْفَةً وَرَحْمَةً وَرَهْبَانِيَّةً ابْتَدَعُوهَا مَا كَتَبْنَاهَا عَلَيْهِمْ إِلَّا ابْتِغَاءَ رِضْوَانِ اللَّهِ فَمَا رَعَوْهَا حَقَّ رِعَايَتِهَا ۖ فَآتَيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا مِنْهُمْ أَجْرَهُمْ ۖ وَكَثِيرٌ مِّنْهُمْ فَاسِقُونَ (27)

२७. उन के बाद फिर भी हम लगातार अपने सन्देष्टाओं (रसूलों) को भेजते रहे और उनके बाद हम ने ईसा पुत्र मरियम को भेजा और उन्हें इंजील दी और उन के पैरोकारों के दिल में प्रेम और दया (रहम) का जज़बा रख दिया,[1] हाँ बैराग तो उन्होंने ख़ुद खोज लिया था[2] हम ने उन पर फ़र्ज़ नहीं किया था[3] सिवाय अल्लाह की

---

[1] رَأْفَة (राफ़:) का मतलब है कोमलता, और रहमत का मतलब है दया। पैरोकारों से मुराद ईसा عليه السلام के साथी हवारी हैं, यानी उन के दिलों में एक-दूसरे के लिए प्यार और मुहब्बत का जज़बा पैदा कर दिया, जैसे सहाबा केराम ﷺ एक-दूसरे से प्रेम मुहब्बत करने वाले थे। رُحَمَاءُ بَيْنَهُمْ यहूदी इस तरह आपस में हमदर्दी नहीं रखते थे जैसे हज़रत ईसा के मानने वाले थे।

[2] رَهْبَانِيَّة (रहबानियत) رَهْب रहब (डर) से बना है या رُهْبَان रूहबान (फ़क़ीर) से संबन्धित (मुताल्लिक़) है। रहबानियत का मतलब बैराग है, यानी दुनिया से संबंध (ताल्लुक़) तोड़ कर जंगल में जाकर अल्लाह की इबादत करना, इसकी पृष्ठभूमि (पसमंजर) यह है कि ईशदूत ईसा के बाद ऐसे राजा हुए जिन्होंने तौरात और इंजील में बदलाव कर दिया जिसको एक गिरोह ने नहीं माना और राजा के डर से पहाड़ों और गुफ़ा में पनाह लिया, यह उसका आरम्भ था, जिसका आधार मजबूरी थी। लेकिन बाद के लोगों ने अपने बड़ों के अंधे अनुसरण (तक़लीद) में इस नगर त्याग को इबादत का एक नया ढंग बना लिया और ख़ुद को गिरजाघरों और पूजा स्थलों (इबादतगाहों) में बंद कर लिया और उस के लिये दुनिया के त्याग और बैराग को फ़र्ज़ कर लिया, उसी को अल्लाह ने ابتداع (ख़ुद गढ़ना) कहा है।

[3] यह पिछली बात ही की पुष्टि (तसदीक़) है कि यह बैराग उनका ख़ुद बनाया हुआ था, अल्लाह ने उसकी इजाज़त नहीं दी।

ख़ुशी की खोज के[1] तो उन्होंने उस का पूरा पालन (इताअत) न किया, फिर भी हम ने उन में से जो ईमान लाये थे उन्हें उनका बदला दिया, और उन में ज़्यादातर लोग अवज्ञाकारी (फ़ासिक़) हैं।

२८. हे लोगो जो ईमान लाये हो, अल्लाह से डरते रहा करो और उस के संदेष्टा (रसूल) पर ईमान लाओ, अल्लाह तुम्हें अपनी दया (रहमत) का दुगुना हिस्सा देगा[2] और तुम्हें दिव्य ज्योति (नूर) देंगा, जिस की रौशनी में तुम चलो-फिरोगे और (तुम्हारे पाप भी) माफ़ कर देगा, अल्लाह माफ़ (क्षमा) करने वाला दयावान (रहीम) है।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا ٱتَّقُوا ٱللَّهَ وَءَامِنُوا بِرَسُولِهِۦ يُؤْتِكُمْ كِفْلَيْنِ مِن رَّحْمَتِهِۦ وَيَجْعَل لَّكُمْ نُورًا تَمْشُونَ بِهِۦ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۚ وَٱللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ (28)

२९. यह इसलिए कि अहले किताब (ग्रन्थ वाले) जान लें कि अल्लाह की कृपा (फ़ज़्ल) के किसी हिस्से पर भी उन्हें हक़ नहीं और यह कि सारी कृपा अल्लाह के हाथ में ही है, वह जिसे चाहे दे और अल्लाह (तआला) ही बड़ा फ़ज़्ल वाला (कृपालु) है।

لِّئَلَّا يَعْلَمَ أَهْلُ ٱلْكِتَٰبِ أَلَّا يَقْدِرُونَ عَلَىٰ شَىْءٍ مِّن فَضْلِ ٱللَّهِ ۙ وَأَنَّ ٱلْفَضْلَ بِيَدِ ٱللَّهِ يُؤْتِيهِ مَن يَشَآءُ ۚ وَٱللَّهُ ذُو ٱلْفَضْلِ ٱلْعَظِيمِ (29)

---

[1] यानी हम ने तो उन पर अनिवार्य (फ़र्ज़) किया था कि हमारी ख़ुशी की खोज करें। दूसरा अनुवाद यह किया गया है कि उन्होंने यह काम अल्लाह को ख़ुश करने के लिए किया था, लेकिन अल्लाह ने साफ़ कर दिया कि अल्लाह की ख़ुशी दीन में अपनी तरफ़ से नई बातें बनाने से हासिल नहीं हो सकती, चाहे वह कितनी ही अच्छी क्यों न हों, अल्लाह की ख़ुशी तो उस की इताअत हीं से मिलती है।

[2] यह दुगुना प्रतिफल (अज्र) उन ईमानवालों को मिलेगा जो नबी ﷺ से पहले के नबी पर ईमान रखते थे फिर आप ﷺ पर भी ईमान लाये, जैसाकि हदीस में बयान किया गया है। (सहीह-अल-बुख़ारी, किताबुल इल्म, सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान) एक दूसरी व्याख्या (तफ़सीर) के अनुसार जब अहले किताब ने इस बात पर गर्व (फ़ख़) का प्रदर्शन (इज़्हार) किया कि उन्हें दुगुना पुण्य (अज्र) मिलेगा तो अल्लाह ने मुसलमानों के पक्ष (हक़) में यह आयत उतारी। (तफ़सील के लिये तफ़सीर इब्ने कसीर देखिये)